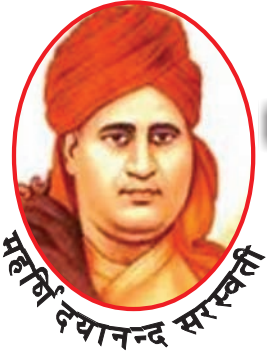


॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

नवम्बर, 2014 वर्ष 17, अंक 11

विक्रमी सम्वत् 2071

एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110

दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये

ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

कुल पृष्ठ 20

वैदिक संस्कृति का प्रचारक-आर्यसमाज

□ स्व. मनुदेव 'अभय' विद्या वाचस्पति

आज से डेढ़-दो शतक पूर्व महर्षि दयानन्द ने देश निवासियों के हितार्थ एक अत्यन्त महत्वपूर्ण चेतावनी दी - “जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ भी हाथ न लगेगा।” इसमें महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के उद्देश्यानुसार आचरण करो अर्थात् प्रथम जानो, मानो और जीवन्त करो। ये आर्य समाज के सिद्धान्त को सर्वोपरि मानते हैं, सर्वोपयोग कहते हैं। उनकी मान्यता होगी कि उन्नति भी इसी से होगी। और बात सत्य भी है।

यह चेतावनी किसी सामान्य व्यक्ति तथा कथित 'महात्मा' ने नहीं,

महर्षि दयानन्द की इन धारणाओं और घोषणाओं की पृष्ठ भूमि बिना समझे स्थिति स्पष्ट नहीं हो पाती। १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बंगाल और महाराष्ट्र जन चेतन जागृति में जाने जाते थे। बंगाल में उन दिनों राजा राम मोहन राय धार्मिक और सामाजिक क्रांति 'ब्रह्म समाज' के माध्यम से कर रहे थे। अपने भाई की मृत्यु के बाद 'सती' के नाम पर उनकी भाभी को उसके पति के साथ जीवित ही जला दिया। इसी प्रकार के वीभत्स काण्ड बंगाल में अनेक स्थानों पर हो रहे थे। सुशिक्षित राजा राम मोहन राय ने इस दानवीय कुप्रथा के जड़ मूल से नष्ट करने का बीड़ा उठाया। उन्होंने मनुस्मृति तथा अन्य गृह-सूत्र ग्रंथों के आधार

संघे शक्ति कलयुगे

अंगुष्ठ और कनिष्ठा को मिलाकर मुट्ठी या मुक्का बनाया जा सकता है देश में सर्वत्र बिखरे आर्यों को मिलाकर एक सशक्त 'आर्य-वोटशक्ति' की नितान्त आवश्यकता है। शक्ति सम्मुख खूँखार सिंह तथा हाथी भी झुक जाता है। जब तक 'आर्य वोट-शक्ति' वर्तमान देश की राजनीति में अपना स्थान नहीं बनाती तब तक केन्द्रीय सरकार हमारी बातें नहीं सुनेगी। आर्य-विचारधारा वाला चाहे किसी भी राजनैतिक दल का सदस्य हो किन्तु चुनाव या उपचुनाव के समय आर्यसमाज की शिरोमणि सभा, चाहे जो हो, सभा आर्य-नेताओं के ह्विप के अनुसार कार्य करे। जब तक राष्ट्र में समग्र रूप से 'आर्यगण' अपनी सामूहिक शक्ति तथा मतदान का रुझान 'आर्य ह्विप' के अनुसार नहीं करेंगे, तब तक आर्यरत्नों को कोई भी नहीं पूछेगा। संगठन में ही शक्ति है।-लेखक

अपित एक ऐसे महान योगी ने दी थी जो अपनी योग साधना के आधार पर 18-18 घंटे समाधि का आनन्द, नहीं परमानन्द में लीन रहने में सफल रहा था। उसे योगी की अपेक्षा ऋषि नहीं? 'महर्षि' कहना ही उचित होगा। 'ऋषि' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा गया है-योग द्वारा दूर-दृष्टि धारण करने वाला, भविष्य की संभावनाओं और रचनाओं के सम्बन्ध में स्पष्ट दृष्टि धारक 'महर्षि' कोटि की आत्माएं होती हैं। योगी और धर्मात्मा कोटि में दो महा पुरुषों का नाम आदरपूर्वक लिया जाता है। योगिराज श्रीकृष्ण और योगिराज महर्षि दयानन्द ने मानव जाति के कष्टों को दूर करने तथा ठीक-ठीक मार्ग दर्शन की इच्छा से मोक्ष और परमात्मा के सानिध्य में रहकर अनिर्वचनीय आनन्द प्राप्त करना नहीं चाहा। इन दोनों योगियों ने मृत्यु के उपरान्त पुनः इसी देश में मनुष्य जीवन प्राप्त कर पीड़ित मानवता के अपार कष्टों को दूर करने की इच्छा अपने अपने मन में रखी थी। धन्य हैं वे।

पर सिद्ध कर दिया कि सती प्रथा न केवल दानवीय है अपितु धर्म शास्त्रों के विरुद्ध भी है। उन्होंने तत्कालीन अंग्रेज शासकों की सहायता से 'सतीप्रथा' पर प्रतिबंध लगवा दिया। वस्तुतः यह एक महान उपलब्धि थी। कहा जाता है- १५ नवम्बर १८२३ को ब्रह्मानिकल नामक पत्रिका में शिव प्रसाद शर्मा के नाम एक लेख। उसमें उन्होंने लिखा-हम अपनी गम्भीर भावना से अन्य वस्तुओं के साथ ईश्वर को भारत में अंग्रेजी शासन के वरदान के लिए विनम्र धन्यवाद अर्पित करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि यह शासन (अंग्रेजी राज्य) आगे आने वाली अनेक शताब्दियों तक अपना कृपा पूर्ण कार्य करता रहे। कालान्तर में केशवचन्द्र सेन ने अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध बगावत कर दी। यह था ब्रह्म समाज का राजनीतिक दर्शन, जो कि आगामी पीढ़ी के लिए अभिशाप बन सकता था।

(शेष पृष्ठ 18 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

टंकारा ट्रस्ट की प्रचार सामग्री का लोकार्पण

दिल्ली स्थित डी.ए.वी. मुख्यालय में एक समारोह में प्रतिवर्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती टंकारा ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित प्रचार सामग्री को इस वर्ष टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी, प्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा श्री पूनम सूरी जी के कर कमलो द्वारा लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर डी.ए.वी. के उपप्रधान श्री तिलकराज जी गुप्ता, डी.ए.वी. विश्वविद्यालय जालंधर के प्रशासक एवम् सलाहकार श्री एच. आर. गन्धार साथ में श्री सतीश कुमार शर्मा निर्देशक डी.ए.वी. कॉलेज एवम् श्री एस.के. शर्मा, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा उपस्थित थे। इस अवसर पर टंकारा वैदिक दैनन्दिनी 2015, वार्षिक कलैण्डर 2015 एवम् ओ३म गायत्री मन्त्र सहित सुसज्जित पोस्टर का लोकार्पण हुआ।

इस अवसर पर उपस्थित टंकारा ट्रस्ट एवम् टंकारा समाचार के सम्पादक अजय जी ने अपने उद्बोधन में बताया कि उपरोक्त सामग्री प्रतिवर्ष दीपावली से पूर्व प्रकाशित कर पूरे भारत ही नहीं पूरे विश्व में वितरित की जाती है जिससे ऋषि भक्त ऋषि जन्म भूमि से जुड़ी हुई



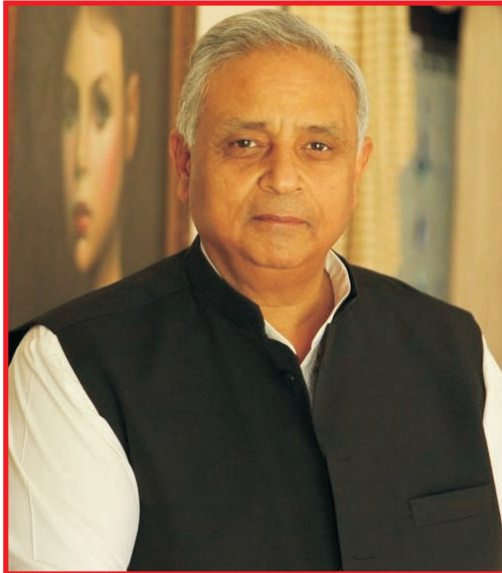
स्मृतियों को ताजा कर लेते हैं साथ ही पुनः ऋषि जन्म भूमि से जुड़ने का प्रण भी लेते हैं और उस जन्मभूमि से सम्बन्ध बनाए रखने का सफल प्रयास सिद्ध हो रहा है। ट्रस्ट द्वारा वैदिक दैनन्दिनी काफी प्रसिद्ध हुई है तथा ऋषि भक्तों को इसे प्राप्त करने की इच्छा हमेशा बनी रहती है। अन्त में श्री पूनम सूरी जी का लोकार्पण करने पर धन्यवाद कर समारोह सम्पन्न हुआ।
- विशेष सम्वाददाता द्वारा

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2015

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री पूनम सूरी जी होंगे

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 16, 17, 18 फरवरी 2015 (सोमवार, मंगलवार, बुधवार) को महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। तीन दिन आयोजित होने वाले इस मुख्य कार्यक्रम का शुभारम्भ 11 फरवरी 2015 से ही प्रारंभ हो जाएगा, जिसके अन्तर्गत ऋग्वेद पारायण यज्ञ प्रातः एवम् सायं निरन्तर होता रहेगा। जिसमें श्री सत्यपाल जी पथिक (अमृतसर) के मधूर भजन लगभग पूरे सप्ताह होते रहेंगे।

इस सप्ताह में टंकारा स्थित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों के कार्यक्रम, वेद संगोष्ठी, स्वामी दयानन्द बॉलीवाल टूर्नामेन्ट, टंकारा युवा महोत्सव जिसके अन्तर्गत लेख प्रतियोगिता, मन्त्रों उच्चारण प्रतियोगिता एवम् प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। इसी अवसर डॉ. मुमुक्षु (नोएडा) के सौजन्य से गुरुकुलस्तरीय मन्त्र कठंस्ट प्रतियोगिता



का भी आयोजन किया जाता है।

अन्तिम तीन दिवसों में विशेष यज्ञ, प्रवचन एवम् भजनों का विशेष कार्यक्रम रहता है जिसमें इस वर्ष युवा वैदिक विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार (एसोसियेट प्रो./अध्यक्ष संस्कृत विभाग, राजकीय, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर, नैनीताल) एवम् युवा भजनोपदेशक श्री कुलदीप शास्त्री (बिजनौर) के मधुर भजनों का भी आयोजन किया गया है।

मंगलवार दिनांक 17.02.2015 अपराह्न 3 से 5 बजे विशेष श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया जा रहा है जिसमें गुजरात राज्य के राज्यपाल एवम् मुख्यमन्त्री को आमन्त्रित किया गया है, जिनके आने की सम्भावना है।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री पूनम सूरी जी, पौत्र आनन्द स्वामी जी महाराज एवम् प्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति/आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा होंगे।

क्या आपने मां को धन्यवाद दिया

एक मां है और एक है उसका बच्चा। जब से वह पैदा हुआ तब से आज तक मां रोज उसकी मालिश करती है। उसे अच्छा तो लगता है, पर यह पता नहीं है कि मां ऐसा क्यों करती है। इसके बदले वह रात भर रोता है और मां को नींद से जगा कर उसकी इस कोशिश के लिए धन्यवाद देता है।

बच्चा कुछ बड़ा होता है, तो मां उसे चलना सिखाती है। उसे एक-एक कदम उठा कर चलता देख पुलकित हो उठती है। दो साल का होने तक वह दौड़ना भी सीख जाता है। अब जब मां उसे आवाज लगाती है तो बच्चा उसके पास आने की बजाय वहां से दूर भागता है। मां से दूर भागकर बच्चा उसे धन्यवाद देता है।

वही बच्चा जब तीन साल का होता है तो मां उसे सिखाती है कि खाना कैसे खाया जाता है। एक दिन बड़े चाव से उसके लिए खीर पकाती है, छोटी सी कटोरी में परोसकर उसके सामने रखती है पर बच्चा कटोरी पटक देता है, क्योंकि उसे चाकलेट चाहिए। इस तरह वह अपनी मां को खाना देने के लिए धन्यवाद देता है।

बच्चा बड़ा हो रहा है। मां उसे 12 रंगों वाली पेंसिलों का एक पैकिट लाकर देती है। एक सुन्दर चित्रकारी/रंग करने वाली पुस्तक भी देती है। पर बच्चा उस पुस्तक को फाड़कर इधर-उधर फेंक देता है और घर की साफ दीवारों पर रंगीन लकीरें बना देता है। इस तरह उसने मां को रंगों की दुनिया से पहचान कराने के लिए धन्यवाद दिया है।

जब वह पांच साल का होता है, मां उसके लिए सुंदर से कपड़े लाती है। मां कल्पना करती है कि जब उसका बच्चा इस खूबसूरत कपड़ों को पहनकर इठलाएगा तो उसे कितनी खुशी होगी। बच्चा मिट्टी में खेलकर जब घर लौटता है तो कपड़े बुरी तरह गंदे हो चुके होते हैं। इस तरह वह मां को प्यार से कपड़े लाने के लिए धन्यवाद देता है।

कुछ दिन बाद बच्चा स्कूल जाता है। मां उसे स्कूल तक छोड़ने जाती है, पर वह स्कूल के बाहर ही रोना शुरू कर देता है। जोर-जोर से कहता है, मैं नहीं जाऊंगा। बच्चे ने मां को स्कूल तक लाने के लिए धन्यवाद दिया है।

जब बच्चा सात साल का हुआ तो मां ने उसे एक बड़ी-सी गेंद लाकर दी। बच्चे ने उत्साह में वह गेंद सीधे पड़ोसी के घर की ओर फेंकी। एक खिड़की का कांच टूटकर गिर गया। इस बच्चे ने मां को गेंद देने के लिए धन्यवाद दिया।

अब बच्चा आठ साल का हो चुका है, वह मां के साथ आइसक्रीम लेने जाता है और सारी आइसक्रीम अपने कपड़ों पर गिरा लेता है। जाहिर

है, आइसक्रीम दिलाने के लिए मां को धन्यवाद देने का उसके पास यही तरीका है।

अब नौ साल के बच्चे को मां संगीत सीखाने के लिए भेज देती है। एक सुन्दर सा गिटार भी खरीदकर देती है, पर दो दिन बाद गिटार के तार तोड़ कर उसने मां के प्रति अपना आभार जता दिया है। अब वही बच्चा दस का हो गया है, वह मां की बातों पर ध्यान नहीं देता। मां से ज्यादा वक्त टी.वी. को देता है। जब कार से उतरता है तो सीधे पार्क की ओर दौड़ जाता है, मां की ओर मुड़कर भी नहीं देखता क्योंकि पार्क में उसके मित्र खड़े हैं। इस तरह उसने मां का धन्यवाद किया।

अब बच्चा बड़ा हो गया है, उसकी अपनी पसंद-नापसंद मां की इच्छाओं से ज्यादा बड़ी हो चुकी है। एक दिन बच्चा इतना बड़ा हो जाता है कि उसे मां के सहारे की जरूरत नहीं होती। वह अपनी जिन्दगी के फैसले अपने आप लेने लगता है।

बच्चे का विवाह मां बड़े अरमान से करती है। बच्चे की पसंद नापसंद से बहु लाती है और स्वयं घर परिवार की नम्बर दो होकर रह जाती है। नम्बर दो पर देख बच्चा फिर मां को धन्यवाद देता है। यह किसी एक बच्चे की कहानी नहीं है। आप या हम सब इसी तरह बड़े होते हैं और अपनी मां को बड़े होने के दौर में ठीक ऐसे ही धन्यवाद देते हैं। पर जरा सोचिए उस मां के बारे में जिसे हम इस तरह धन्यवाद देते आए हैं। अगर आपने अभी तक उसे सही मायनों में धन्यवाद नहीं दिया है, तो आज कह दें माँ को सर्वाधिक प्रेम अपनी सन्तान के साथ होता है। जैसा कर्ता को अपनी कृति के साथ, जैसे रचयिता को

अपनी रचना के साथ प्रेम होता है वैसे ही माँ को अपनी सन्तान के साथ प्रेम होता है। उसके मन और मस्तिष्क पर अपनी सन्तान ही छाई रहती है। हर समय उसका ध्यान, उसका चिंतन, उसकी देखभाल, उसका संरक्षण और उसकी सेवा के लिए तत्परता, माँ के अतिरिक्त और कौन दिखा सकता है? स्वामी दयानन्द जी ने माता को सन्तान का पहला शिक्षक माना है। इस तथ्य का उल्लेख करते हुये उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में कहा है कि जितना माता से संतानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। माँ का महत्त्व उनसे पुछो जिनकी माँ अब नहीं है। माँ एक आंचल है, विश्वास का, आस्था का, हमारे सब्बल का। माँ एक अधिकार है, माँ एक ठण्डी छांव हैं, माँ स्नेह की वह ऊँचाई जिसे आप और हम समझने में असमर्थ हैं।

अजय टंकारावाला

टंकारा में बोधोत्सव 2015 का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकारी हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार, मंगलवार, बुधवार 16, 17, 18 फरवरी 2015 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

पति-पत्नी मिलकर गृहस्थ को सुखी बनाएँ

□ महात्मा चैतन्यमुनि

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद में तृण से लेकर परमेश्वर तक का ज्ञान परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के आरंभ में ही चार ऋषियों के माध्यम से प्रदान कर दिया था ताकि संसार में वेद के आलोक में जीवन यापन करके व्यक्ति इहलोक व परलोक की उन्नति करता हुआ अपने जीवन को सार्थकता प्रदान कर सके। वेद में गृहस्थ को सुखी बनाने के अनेक मन्त्र हैं मगर यहां पर हम पति-पत्नी के गुणों का थोड़ा सा दिग्दर्शन कर रहे हैं। यह वैदिक दर्शन की अपनी विशेषता है कि पत्नी को भी वेद में बहुत ही सम्मानजनक स्थान पर माना गया है। यजुर्वेद में एक मन्त्र आया है-इडाऽएह्यदितऽएहि सरस्वत्येहि। असावेह्यसावेह्य॥ (यजु.038-2) मन्त्र में पति कह रहा है कि हे इडे ऐहि! (हे इडे) तू मुझे प्राप्त हो। (इडा से तात्पर्य है मानवी अर्थात् मनुपुत्री) इस प्रकार पत्नी का पहला गुण बताया गया कि वह-
1. **मानवी हो**-मनु की पुत्री अर्थात् समझदार हो। एक समझदार पत्नी में पतिसेवा, सन्तान निर्माण, मधुरभाषिणी, संवेदनशीलता, सेवा तथा साधना आदि समस्त गुण स्वाभाविकरूप से ही होते हैं। वेद में दूसरा गुण कहा गया है। 2. **यज्ञानुकाशिनी**-अर्थात् अपने जीवन को यज्ञ से प्रकाशित करने वाली हो। उसके गृहस्थ में प्रतिदिन यज्ञ हो तथा उसका जीवन यज्ञमयी भावनाओं से परिपूर्ण हो। 3. **अदिते ऐहि**-(अदीना देवमाता) अर्थात् कभी न क्षीण होने वाली तथा देवों का निर्माण करनेवाली हो। अदिति का एक अर्थ देने वाली भी है अर्थात् पत्नी दानशीला हो, 4. **सरस्वती**-सुशिक्षित व विज्ञानवती तथा परिष्कृत जीवन वाली हो, 5. **असौ ऐहि**- वह सभ्य हो, शास्त्रीय ज्ञानवाली हो तथा सदाचारिणी हो।

यजुर्वेद के एक अन्य मन्त्र में कहा गया है कि पति-पत्नी दोनों ही प्रभु भक्त हों-भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञं हि सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः॥ (यजु. 12-60)। 1. **भवतं नः**-परमात्मा कहते हैं कि हे पति-पत्नी तुम हमारे बनो और फिर आगे प्रभु का कौन बन सकता है इन गुणों का संकेत भी किया गया है, 1. **समनसौ**-जब दोनों ही समान मन वाले होंगे... 3. **सचेतसौ**-एक ही इष्टदेव का ध्यान करने वाले होंगे... दोनों का ज्ञान एक सा होगा... 4. **अरेपसौ**-दोषरहित होकर जब दोनों पतिव्रता व पत्नीव्रती होंगे... 5. **यज्ञं मा हिंसिष्टम्**-जो कभी भी यज्ञ की हिंसा नहीं करेंगे अर्थात् यज्ञ को कभी भी प्रभु की उपासना नहीं छोड़ेंगे..., 7. **जातवेदसौ**-स्वयं पुरुषार्थ से धन कमाने वाले बनें... 8. **शिवौ भवतम्**-धन कमाकर लोक कल्याण करनेवाले बनें... धन के मद में आकर कभी भी किसी का अशुभ नहीं करेंगे... फिर प्रभु कहते हैं कि-अद्य नः- आज से तुम मेरे हो और मैं तुम्हारा हूँ... फिर वह प्रभु आपको अपने पास बिठाएगा। यदि तुम्हारे पास उपरोक्त गुण होंगे और फिर आगे कहा है-विश्वकर्मा त्वा सादयत्वन्तरिक्षस्य पृष्ठ.... ध्रुवा। (यजु. 14-12) हे पत्नी तुझे उस विश्वकर्मा परमात्मा ने अन्तरिक्षस्य पृष्ठे सादयतु (हृदयान्तरिक्ष की श्री में) बिठाया है (बिठायेगा यदि आगे के गुण भी होंगे)। 1. **ज्योतिष्पतिम्**-तेरा जीवन ज्ञान की ज्योति से जगमगा रहा है या जगमगाए... 2. **प्राणाय, अपानाय, व्यानाय विश्वस्मै**-प्राणशक्ति के लिए, दोषों को दूर करने वाली अपान शक्ति के लिए और सारे शरीर में व्याप्त होकर नाड़ीसंस्थान को उत्तम रखने वाले व्यानशक्ति के लिए समर्थ हो... 3. **विश्वं ज्योति यच्छ**-सम्पूर्ण

ज्ञान देने वाली बन अर्थात् स्वाध्याय व सत्संग से स्वयं ज्ञान प्राप्त करके अन्यो को भी ज्ञान बांटने वाली बनो। 4. **वायु ते अधिपति**-तेरा गुण-सम्पन्न पति क्रियाशील हो (उसे उस प्रकार की प्रेणा व सहयोग आदि दे) 5. **तया देवतया अंगिरस्वत् ध्रुवा सीद**-उस देवतुल्य पति के साथ अंग-प्रत्यंग में रसवाले व्यक्ति की भान्ति तू ध्रुव होकर रहने वाली बन.... इसी दृष्टिकोण से यजु. (14-13) में पत्नी को 'रक्षी, विराट, सम्राट, स्वराड व अधिपत्नी' कहा है...

इसी वेद में आगे कुछ और गुण बताए गए हैं- आधिपत्यसि बृहती दिग्विश्वे ते.... यजमानं च सादयन्तु॥ (यजु. 15-14)

1. **अधिपत्नी असि-हे स्त्री!** तू घर की अधिक्येन पालयित्री है.....
2. **बृहती दिक्**- यह प्रौढ़ा बृहस्पतिरूप अधिष्ठावाली-बढ़ी हुई ऊर्ध्वा तेरी दिशा है, तेरे जीवन का लक्ष्य सर्वोच्च स्थिति में पहुंचना है, तूने ऊर्ध्वा दिशा के अधिपति बनना है, 3. **ते देवाः विश्वे**-बारह विश्वदेव ही तेरे देव हैं। इन बारह के बारह मासों के नामों से तुझे 'इस संसार-वृक्ष की विशिष्ट शाखा बनना है, ज्येष्ठ बनना है, कामादि से पराभूत नहीं होना, शुभ उपदेश का श्रवण करना, इसे ही कल्याण का मार्ग समझना, इस पर चलने के लिए कल का प्रोग्राम नहीं बनाना, कामादि को आज ही अभी आत्मावलोकन करके ढूँढ-ढूँढकर मारना है..... इस प्रकार अपनी उच्चता का पोषण करना है-यही तेरा ऐश्वर्य है.... इसके आगे सांसारिक ऐश्वर्य तुच्छ है..... ये देव (बारह मास) यही बोध दे रहे हैं और ये ही तेरे (अधिपतयः) अधिष्ठातृरूपेण रक्षक होंगे। 4. **बृहस्पतिः हेतीनाम् प्रतिधर्त्ता**-ऊँचे से ऊँचे ज्ञान का पति गृहपति घर पर आने वाली घातक बतों का प्रतिकार करने वाला है, 5. **त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ स्तोमौ**-पुष्टि तथा 33 देवों का धारण ही तेरा प्रभु स्तवन हो.... वे त्वा पृथिव्याम् स्तम्भीताम्-इस शरीर में सेवित करने वाले हों.... तेरे शरीर को ये पूर्ण स्वस्थ बनाएं। 6. **उक्थे वैश्वदेवाग्निमारुते अव्यथायै स्तम्भीताम्**-प्रशंसनीय विश्वदेव (दिव्यगुण), अग्नि (वैश्वानर अग्नि) तथा मरुत (प्राणापान) ये सब पीड़ा के अभाव के लिए तुझे थामें, 7. **शाक्वरैवते सामनी अन्तरिक्षे प्रतिष्ठित्यै**-शक्ति को प्राप्त करने की भावना तथा धन और ज्ञानधन को प्राप्त करने की भावना तेरे साम और उपासन हों, ये तेरे हृदय में प्रतिष्ठित हों.... जीवन के सिद्धान्त बन जाएँ... कभी अलग न हों, 8. **देवेषु प्रथमजाः ऋषयः त्वा दिवो मात्रया वरिण्या प्रथन्तु**-विद्वानों में प्रथम कोटि के तत्त्वद्रष्टा विद्वान तुझे ज्ञान के अमुक-अमुक अंश से तथा हृदय की विशालता से विस्तृत जीवन वाला बनाएँ, 9. **विधर्त्ता च अयं च अधिपतिः ते च सर्वे संविदानाः त्वा यजमानं च स्वर्लोके सादयन्तु**-घर की आपत्तियों से बचाने वाली ज्ञानी गृहपति और ये आधिक्येन रक्षक 'विश्वदेव' और वे सब ज्ञानी एकमत्यवाले होकर तुझे और यज्ञशील गृहपति को दुःखाभाववाले लोक के ऊपर प्रकाशमय लोक में स्थापित करें।

- महादेव, सुन्दरनगर, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश-174401

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

सफलता का मानदण्ड

□ सीताराम गुप्ता

एक अत्यंत आकर्षक शब्द है सफलता। जिजीविशा से भरपूर। इतना आकर्षक, इतना जीवंत कि इसके उच्चारण मात्रा से रोमांच हो उठता है। और जितना आकर्षक, जितना जीवंत शब्द सफलता है उतना ही अनाकर्षक व अनुत्साहपूर्ण है असफलता। असफलता शब्द की अनुभूति मात्रा से प्रतीत होता है मानों किसी ने तन-बदन से सारा लहू ही निचोड़ लिया हो। पर क्या असफलता सफलता की विरोधी होती है? वास्तव में किसी काम का पूरा हो जाना अथवा हमारा अपने गंतव्य तक पहुँच जाना ही सफलता नहीं है। सफलता तो एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया में ऊँचे-नीचे रास्तों का आना स्वाभाविक है। सफलता भी एक ऐसा ही रास्ता है।

मेरे एक मित्र हैं जो शहर की सड़कों पर लगी लाल बत्तियों से बड़े परेशान रहते हैं। कहते हैं दस किलामीटर का सफर जो दस मिनट में पूरा हो जाना चाहिए इन लाल बत्तियों की वजह से आधे घंटे में भी पूरा नहीं होता। बड़ी मुसीबत हैं ये लाल बत्तियाँ। अब विचार कीजिए फिर अगर ये लाल बत्तियाँ न हों तो क्या हम अपने गंतव्य पर जल्दी पहुँच जाएँगे? शायद नहीं। संभव है पहुँच ही न पाएँ। लाल बत्तियों की ज़रूरत ही इसलिए पड़ी ताकि हम अपने गंतव्य पर जल्दी पहुँच सकें।

हर लाल बत्ती इस बात का प्रणाम है कि हम जल्दी ही इस बाधा को पार करके आगे बढ़ेंगे क्योंकि रात और दिन की तरह लाल के बाद हरी और हरी के बाद लाल बत्ती होना निश्चित है। हम जितनी लाल बत्तियाँ पार कर जाएँगे हमारा गंतव्य निकट होता चला जाएगा। ट्रैफिक सिग्नल्स की तरह ही हमारे जीवन की राह में भी अनेक बाधाएँ अथवा रुकावटें आती हैं। बाधा का अर्थ ही है कि हम आगे बढ़ रहे हैं। एक दिन हमारे किसी एक रास्ते की सारी बाधाएँ दूर हो जाएँगी और हम अपने गंतव्य पर पहुँच जाएँगे। यदि हमारे रास्ते में ये बाधाएँ न आतीं और हम उन्हें दूर नहीं करते तो क्या अपने गंतव्य पर पहुँचने का सुख अथवा सफलता हमारे हाथ लगती? प्रसिद्ध उर्दू शायर मिर्जा 'ग़ालिब' कहते हैं:

**रंज से खूँगर हुआ इसाँ तो मिट जाता है रंज,
मुश्किलें मुझ पर पड़ीं इतनी कि आसाँ हो गईं।**

जीवन का कोई भी रास्ता सरल अथवा निर्बाध नहीं होता। अनेक असफलताओं से होकर गुज़रता है सफलता का मार्ग। एक सफलता के पीछे अनेक छोटी-छोटी असफलताएँ छिपी रहती हैं। कभी-कभी किसी बड़े पत्थर के टुकड़े करने के लिए हमें उस पर असंख्य प्रहार करने पड़ते हैं और अंत में एक प्रहार ऐसा होता है कि वह पत्थर को दो या अधिक टुकड़ों में विभक्त कर देता है। लेकिन क्या अंतिम प्रहार से पहले किये गए सारे प्रहार निरर्थक थे? नहीं। ऊपर से बेशक पहले का हर प्रहार निरर्थक लगता हो लेकिन था हर प्रहार पूर्णतः सार्थक क्योंकि उन प्रहारों में ही अंतिम प्रहार की सफलता छुपी थी। हर चोट ने निरंतर उस पत्थर को टूटने के अधिकाधिक निकट ला दिया था। वास्तव में हर असफलता एक प्रयास ही है जिसे हम महत्त्व नहीं देते और उस असफलता के बिना सफलता संभव ही नहीं। असफलता एक चुनौती है। हरिवंशराय बच्चन कहते हैं :

**असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गयी, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम**

**संघर्ष करो मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती।**

जहाँ तक सीखने का संबंध है व्यक्ति सफलता से नहीं असफलता से सीखता है। हर असफलता के बाद पुनर्मूल्यांकन का अवसर मिलता है। सफलता के बाद हम कभी अपना पुनर्मूल्यांकन नहीं करते। समस्या आए बगैर हम रास्ता नहीं खोजते। समस्याएँ ही हमें उपाय खोजने के लिए प्रेरित करती हैं। समस्याओं अथवा असफलताओं के बाद ही हम अधिक चिंतनशील होते हैं तथा हममें धैर्य का विकास भी होता है। असफलताओं के बाद ही हम असफलता का कारण जानने का प्रयास करते हैं। अपनी कमियों और सीमाओं से रूबरू होते हैं। नए सिरे से आगे बढ़ने के लिए अपनी क्षमता का विकास करते हैं। यदि हम बिना बाधाओं को दूर किए, बिना अपनी क्षमता और योग्यता का विकास किए थोड़ा आगे बढ़ पाते हैं तो उसे सफलता तो हरगिज नहीं कहा जा सकता।

जीवन की हर असफलता किसी बड़ी सफलता के लिए अवसर का आधार प्रस्तुत करती है। यह तथ्य केवल व्यक्ति के संदर्भ में ही नहीं अपितु समाज, राष्ट्र तथा विश्व के संदर्भ में भी उतना ही सही है। कहा गया है कि प्रतिकूल या विषम परिस्थितियाँ प्रतिभा को प्रकट करती हैं तथा समशुद्ध इसका लोप। सामान्य व्यक्ति इस तथ्य को स्वीकार नहीं कर सकता और इसीलिए वह असफल रह जाता है सफल नहीं हो पाता। सफल व्यक्ति वह है जो असफलता की स्थिति में भी निराश न होकर विषमताओं को स्वीकार करके आगे बढ़ने का प्रयास करता है क्योंकि इसी प्रयास में निहित है सफलता का सूत्र। प्रयास न करना अथवा असफल होने पर बीच में प्रयास छोड़ देना ही असफलता का प्रमुख कारण है। विषम या प्रतिकूल परिस्थितियाँ अवरोध उत्पन्न नहीं करतीं अपितु हमें अधिकाधिक ऊँचा उठाने के लिए, आगे बढ़ाने के लिए अवसर प्रदान करती हैं। कहा गया है :

**बादे-मुख़ालिफ़ से न घबरा तू ए उकाब,
ये तो चलती है तुझे ऊँचा उठाने के लिए।**

कहा गया है: **प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः**

प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्यमाः।

विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः

प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति॥

सामान्य जन विघ्नों के आने के डर से कार्य प्रारंभ ही नहीं करते, मध्यम प्रकृति के लोग कार्य तो प्रारंभ करते हैं किंतु विघ्नों के आने पर उसे छोड़ देते हैं लेकिन उत्तम प्रकृति के लोग कार्य प्रारंभ करने के बाद बार-बार विघ्नों के आने पर भी उसे नहीं छोड़ते अपितु पूरा करके ही दम लेते हैं। यही बात किसी प्रतियोगिता तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में सफलता के संबंध में भी उतनी ही ठीक बैठती है। सामान्य जन हार के डर से किसी प्रतियोगिता में भाग नहीं लेते, मध्यम प्रकृति के लोग भाग तो लेते हैं किंतु पहली ही बार हार जाने पर उसे छोड़ देते हैं लेकिन उत्तम प्रकृति के लोग बार-बार हारने पर भी भाग लेना नहीं छोड़ते अपितु जीतकर ही दम लेते हैं।

एक टीवी चैनल के एक रियलिटी शो में एक युवक लगातार शुरू से ही इस प्रतियोगिता में भाग ले रहा है लेकिन वह हर बार पहले राउण्ड

में बाहर हो जाता है। इस बार भी कुछ ऐसा ही होता है। युवक प्रतियोगिता से बाहर हो जाता है। उसकी गायन के क्षेत्र में आगे बढ़ने की उत्कट इच्छा है। प्रतियोगिता के जज भी उसकी इस अदम्य लालसा से अवगत हैं। उसकी मायूसी को देखकर प्रतियोगिता के एक जज उसे सलाह देते हैं कि वह इसके पीछे अपनी जिंदगी तबाह करने की बजाए अपने लिए कोई दूसरा क्षेत्र तलाश करे।

“तो क्या मैं हमेशा के लिए गाना छोड़ दूँ?” युवक अत्यंत दुखी मन से पूछता है। “नहीं, तुम्हें गाना छोड़ने की ज़रूरत नहीं है लेकिन ये भी तो ज़रूरी नहीं है कि तुम इसे ही अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य बनाओ। गाने को छोड़ने की बजाए इसे अपने हृदय में स्थान दो और जीवनवृत्ति के रूप में किसी अन्य क्षेत्र को चुनो। प्रतियोगिता के लिए अगले साल तुम फिर कोशिश कर सकते हो”, जज साहब ने सुझाव दिया। युवक ने दुखी होकर कहा कि बार-बार असफल होने के बाद अब किस मुँह से अगले साल फिर कोशिश करूँ।

एक दूसरे जज कहते हैं कि अगले साल कोशिश करने में हर्ज ही क्या है। तुम सिर्फ तीन बार ही तो असफल हुए हो और वो एक कहानी सुनाते हैं कि कैसे एक चींटी दीवार पर चढ़ने के प्रयास में सात बार गिरती है लेकिन वह प्रयास नहीं छोड़ती और अंत में दीवार पर चढ़ने में सफल हो जाती है। तभी एक चमत्कार घटित होता है। अचानक जज साहिबान आपस में कुछ विचार-विमर्श करते हैं और युवक को किसी गाने का कोई मुखड़ा पुनः गाने के लिए कहा जाता है। युवक जैसे ही मुखड़ा सुनाता है जजों का पैल उसे अगले राउण्ड के लिए चुन लेता है। यह चमत्कार क्योंकि घटित हुआ? यह हुआ युवक की उत्कट इच्छा के कारण। यह उसकी उत्कट इच्छा ही थी जिसके कारण जजों ने नियम बदल दिए। उसे देबारा गाने का मौका दिया गया जो किसी को नहीं मिलता। ब्राजील निवासी पुर्तगाली भाषा के मशहूर लेखक पाओलो कोएलो अपने चर्चित उपन्यास द अल्कोमिस्ट में कहते हैं कि जब आप दिल से कुछ चाहते हैं तो सारी कायनात उसे आपसे मिलाने के लिए साजिश रचती है। अब प्रश्न उठता है कि क्या तीन साल के बाद एक प्ररिभक पड़ाव को पार कर लेना सफलता अथवा जीत की श्रेणी में ही आता है?

वास्तव में सफलता अथवा जीत दुनिया का रिकार्ड तोड़ने में नहीं है। यदि हम अपना ही पिछला रिकार्ड तोड़ते हैं तो भी हम विजेता ही हैं। एक प्रश्न और मन में उठता है कि जीवन में हम कितनी बार असफलता का मुँह देखें? कितनी बार प्रयास करें? इसका अत्यंत सरल-सा उत्तर है कि जब तक सफलता नहीं मिलती तब तक प्रयास करें। कहा गया है:

**योजनानां सहस्रं तु शनैर्गच्छेत् पिपीलिका।
अवगच्छन्वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति॥**

चींटी जैसी मंदगामिनी भी धीरे-धीरे चलकर हज़ारों योजन दूर अपने लक्ष्य तक पहुँच जाती है किंतु गरुड़ जैसा शीघ्रगामी भी निर्णय-अनिर्णय की स्थिति में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ता। कछुए जैसा मंद गति से चलने वाला प्राणी भी निरंतर धीरे-धीरे चलकर खुरगोश जैसे तीव्र गति से चलने वाले प्राणी से बाजी मार लेता है। ज़रूरी नहीं कि सफलता एक ही झटके में मिल जाए। ये भी ज़रूरी नहीं कि सफलता मात्र बहुत तेज़-तर्रार व्यक्ति को ही मिलती है। सफलता के लिए धीरे-धीरे ही सही निरंतर प्रयासरत रहना भी अनिवार्य है।

एक कहानी याद आ रही है। एक राजा किसी बात पर अपने मंत्री से नाराज़ हो गया और उसे उसके परिवार सहित कैद में डाल दिया। जहाँ मंत्री और उसके परिवार को कैद किया गया था वह एक विशाल भवन था जिसके पूरे सौ दरवाज़े थे। मंत्री और उसका परिवार बेकसूर था। एक कैदी की तरह वो भी बाहर आने के लिए छटपटा रहा था। जब भी मौका मिलता वह दरवाज़ों को हिला-हिलाकर देखता कि शायद कोई दरवाज़ा खुल ही जाए और वो अपने परिवार सहित मुक्त हो जाए। उसने अनेक दरवाज़ों को हिला-हिलाकर देखा लेकिन कोई दरवाज़ा नहीं खुला।

इस तरह उसने निरन्तर दरवाज़े देख डाले पर बात नहीं बनी। जब निरन्तर दरवाज़े देख डाले और कोई नहीं खुला तो अब इस एक बचे हुए दरवाज़े से क्या उम्मीद की जा सकती थी? वह निराश से भर उठा पर उसने हार नहीं मानी। वह अंतिम दरवाज़े की ओर बढ़ा। जैसे ही उसने अंतिम दरवाज़े को हिलाया वह एकदम से खुल गया और मंत्री परिवार सहित कैद से मुक्त हो गया। लेकिन क्या अंतिम प्रयास किए बिना वह सफल हो सकता था? नहीं। जीवन में अपेक्षित क्षेत्र में पूर्ण सफलता पाने के लिए अंत तक प्रयास करना अनिवार्य है। याद रखिए:

□ असफलता सफलता की विरोधी नहीं होती। □ असफलताएँ इस बात का प्रमाण हैं कि हम सफलता के मार्ग पर अग्रसर हैं। □ जब हम किसी चीज़ को शिद्दत से चाहते हैं तो वह हमें अवश्य ही प्राप्त होती है। □ यदि हम शिद्दत से कुछ करना चाहते हैं तो हमारे लिए नियमों में परिवर्तन भी किए जा सकते हैं। □ यदि हम अपना पिछला रिकार्ड भी तोड़ते हैं तो भी हम विजेता हैं। □ अपेक्षित सफलता के लिए ज़रूरी है कि हम बीच में ही प्रयास करना न छोड़ दें अपितु विषम परिस्थितियों में भी धैर्य के साथ निरंतर प्रयासरत रहें। □ और जब तक हमें अपेक्षित सफलता नहीं मिलती तब तक प्रयास करते रहें क्योंकि अंतिम दरवाज़ा अवश्य खुलेगा।

- ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन नं. 09555622323

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहाँ एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 5000/- रुपये व्यय आ रहा है, जिससे हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

प्राणो वै प्रज्ञा जो सोचोगे, पाओगे

□ स्व. सत्यकाम वेदालंकार

जो जैसा विचार करता है वह वैसा ही बन जाता है।

जैसा हम चाहेंगे हमें मिलेगा। “माँगो, और तुम्हें मिलेगा।”

“खटखटाओ, और द्वार तुम्हारे लिए खुल जाएँगे।”

“तलाश करो, और तुम पा लोगे।”

हमारे अन्तर में एक ऐसी प्रज्ञा है जो समय और दूरी का व्यवधान लाँघकर सत्य का दर्शन कर लेती है।

इस दृष्टि को मलिन नहीं होना चाहिए। वह बाह्य और मिथ्या रूपों का भेदन कर सच्चाई तक पहुँचती है। एक्सरे की शक्ति से भी अधिक उसमें पारदर्शकता है। यही जीवन को सार्थक बनाती है।

अपने भीतर की इस महानता के अतिरिक्त और कोई सार्वभौमिकता नहीं। किन्तु इस अन्तःशक्ति की प्रेरणा को समझने में चिन्तन की आवश्यकता है।

मानसिक कायरता के कारण हम मौलिक चिन्तन कुछ भी नहीं करते और दूसरे लोगों के विचारों और कथनों के अनुसार जीते हैं। जब कोई समस्या हमारे सामने आती है तो हम उस पर स्वतन्त्र रूप से विचार न कर औरों की शरण जाते हैं। चिन्तन की यह प्रणाली सर्वथा दोषपूर्ण है। दार्शनिक शॉपेनहावर के इस सिद्धान्त को अपना जीवन-सूत्र बना लो: “पढ़ो मत, सोचो।”

संस्कार विचार नहीं है। वे विचारों की आधारभूमि हैं। विचारों को रूप प्रदान करने का काम हमारा है। पर विचार करने का यह अर्थ नहीं कि हम कार्य के समय भी विचार में विकल पड़े रहें। ऐसी विचार-सारणी, जो व्यक्ति को संशय-भंवर में डाल देती है, निष्प्रयोजन है। विचार करना जितना आवश्यक है, क्रियात्मक निश्चय पर पहुँचना उससे ज्यादा आवश्यक है।

अनिश्चयात्मक बुद्धि से जीवन का कोई भी कार्य पूरा नहीं हो सकता। वह उसी तरह निरर्थक है जिस तरह मनुष्य के वे कार्य जिनका कोई प्रयोजन नहीं होता।

विचारात्मक अनिश्चय तभी तक रहता है जब तक विचारक के पास प्रज्ञा न हो और जीवन की निष्प्रयोजकता तभी तक रहती है जब तक कार्य का समुचित उपयोग न हो। छोटे-छोटे कामों के लिए हर समय संकल्प-विकल्प में डगमगाते रहकर जिस प्रकार हम अपनी विचारशक्ति का अपव्यय करते हैं उसी तरह हम जीवन के कल्याणकारी प्रयोजन का रूप न देखकर जीवन-शक्ति का ह्रास करते जाते हैं।

विचारों को शक्तिशाली बनाने के लिए जिस प्रकार ज्ञान-संचय की आवश्यकता है (और ज्ञान-संचय तभी हो सकता है यदि हम अपने नित्य के व्यवहारों में विचारों का अपव्यय न करें), उसी प्रकार जीवन के लिए अर्थपूर्ण प्रयोजन की आवश्यकता है और जीवन-शक्ति को अपव्यय से बचाने की अनिवार्यता है।

प्रयोजनहीन विचारधारा पथभ्रष्ट हो जाती है। पथभ्रष्ट विचारधारा ही चिन्ता की मरुभूमि में प्रवेश कर जाती है। तब विचार-शक्ति लुप्त हो जाती है और जीवन में विचार के स्थान पर केवल चिन्ता की विस्तीर्ण मरुभूमि जीवन का अन्त करने को शेष रह जाती है।

प्रयोजनहीन विचारधारा का पथभ्रष्ट होना बहुत स्वाभाविक है। निरर्थक चिन्ता में मग्न चिन्तक का ध्यान प्रायः ऐसी समस्याओं में उलझ जाता है, जिनका समाधान सम्भव ही नहीं होता।

मनःस्थिति जब ऐसे भंवर में फँस जाए तो निराकरण का यही उपाय है कि हम अर्थहीन विचार-विभ्रम से बाहर निकल कर सोचना बन्द कर दें।

इस दिशा-परिवर्तन से भी मानसिक स्थिति में स्वस्थता आएगी। दृष्टिकोण में नया परिवर्तन आएगा और यह भी संभव है कि पिछली विचारधारा दुश्चिन्ताओं के मरुस्थल का मार्ग छोड़कर सार्थक जीवन के लिए उपयोगी विचारों में व्यस्त हो जाए।

चिन्ताओं को अवचेतन मन की गहराई में नहीं जाने देना चाहिए। दुश्चिन्ताओं की इस बीमारी से छूटने का यही एक उपाय है। चिन्ताओं के चक्कर में न पड़कर एक बार यही सोच लेना चाहिए कि हमारे विक्षेप का सच्चा कारण क्या है। अच्छी तरह विश्लेषण करके देख लेना चाहिए कि क्या उसका वही कारण है जो समझ रहे हैं। आवश्यकता हो तो अपने मित्रों से या अपने विश्वस्त साथियों से उस सम्बन्ध में चर्चा भी कर डालनी चाहिए। कह डालने से उस चिन्ता का भार हल्का हो जाता है। मन की व्यथा कहने से मन में दबी हुई चिन्ता व्यक्त होकर शान्त हो जाती है।

उन दबी-दबाई और जमा करके बोतलों में भरी हुई दुर्भावनाओं से हमारे सम्पूर्ण विचार-जगत् में एक विषैला धुआँ-सा भर जाता है। हृदय का द्वार खोल देने से वह विषाक्त धुआँ बाहर चला जाता है। मन हल्का होता है। दुश्चिन्ताओं से मुक्ति मिलती है।

प्रायः दुश्चिन्ताओं का कोई आधार नहीं होता। केवल किसी अस्पष्ट भय की आशंका व्यक्ति को अस्वस्थ कर देती है।

यह रोग उस अपरिपक्व वय के व्यक्ति को जकड़ लेता है जो अपने नैसर्गिक उद्वेगों का अस्वाभाविक रीति से निरोध करता है।

चिन्ता से बढ़कर, आज के मनुष्य का और कोई बड़ा शत्रु नहीं हो सकता। चिन्ता करने वाले व्यक्ति को जीवन के महत्वपूर्ण कार्य करने का समय ही नहीं मिलता। उसका सारा समय तो व्यर्थ की उधेड़बुनों में ही चला जाता है। जितना अधिक वह अपनी भूलों और असफलताओं पर विचार करता है, उतना ही अधिक उसका मस्तिष्क असन्तुलित होता जाता है।

हमारी चिन्ता का एक और बड़ा कारण यह है कि हम चाहते हैं कि दूसरे सदा हमारे बारे में चिन्तित रहें, और जब वह ऐसा नहीं करते, तो हम स्वयं चिन्तित हो जाते हैं। इसका उपाय इसके अलावा कुछ नहीं है कि हम सदैव अपने को कार्यव्यस्त और बहिर्मुखी रखें।

उपयोगी कार्य में व्यस्त रहना ही चिन्ता की परम औषधि है। कार्यव्यस्त पुरुष ही यज्ञपुरुष होता है। यज्ञ के लिए सबका अपना-अपना यज्ञक्षेत्र है। उस क्षेत्र को पहचानना चाहिए। वह क्षेत्र वही होता है जिसमें कार्य की योग्यताओं और व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति को पूरा अवसर मिले। वह व्यक्ति का कार्यक्षेत्र है। उसका ठीक चुनाव अस्तव्यस्तता में नहीं होता। इस चुनाव पर जीवन की सफलता निर्भर करती है। यह चुनाव ही ठीक न होगा तो कठिन श्रम करने पर भी सफलता संदिग्ध रहेगी। प्रायः देखा गया है कि असफल व्यक्तियों में से अधिकांश व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके कार्यक्षेत्र के चुनाव में भूल हो जाती है।

हमारा क्षेत्र वही होता है जिसमें हमारी रुचि हो, हमें अपने विशेष गुणों के विकास का अवसर मिले।

यह विकास प्रायः निर्माणपरक कार्यों में ही होता है। जब भी हम कुछ

करते हैं तो कुछ नए निर्माण करते हैं। शिल्पी अपने हाथ से जो चीज़ बनाता है उसमें कुछ न कुछ नवीनता रखने का यत्न अवश्य करता है। नवीन निर्माण में ही आनन्द है। उसी में मनुष्य की स्वाभाविक रचनात्मक वृत्ति को सन्तोष मिलता है, और इसी सन्तोष से हमारा व्यक्तित्व विकसित होता है। इस निर्माण में ही यज्ञ की सार्थकता होती है।

कार्य-क्षेत्र का चुनाव काल्पनिक मनोरथों की छाया में नहीं करना चाहिए। माता-पिता के अनुचित दबाव या मित्रों की अनुकृति के प्रभाव में भी यह चुनाव नहीं होना चाहिए।

विधाता ने प्रत्येक व्यक्ति को एक निर्दिष्ट सिद्धि के लिए जगत् में भेजा है। उसी कार्य के प्रति व्यक्ति की एकाग्रित निष्ठा होती है। उसे सिद्धि किए बिना उसे सन्तोष लाभ नहीं होता। अन्तःप्रेरणा उससे वह काम करवाती है। उसे करते हुए जब वह थक जाता है तो कुछ देर विश्राम लेकर नई ताज़गी के साथ फिर काम में निमग्न हो जाता है।

वह पूर्वनिर्दिष्ट कार्य ही उसकी पूजा हो जाती है। मनोरंजन के लिए उसे अन्य उपकरणों का उपयोग नहीं करना पड़ता। उसी कार्य में उसका पूर्ण मनोरंजन हो जाता है।

यह मनोवस्था उसे इस योग्य बना देती है कि वह अपना प्रत्येक कार्य पूर्ण तन्मयता से करता है। जिस उल्लास और भावावेश के साथ अन्य पुरुष आनन्दभोग में प्रवृत्त होते हैं उसी से कर्मशील व्यक्ति अपने कार्य की सिद्धि में प्रवृत्त होता है। तभी उसका कार्यजनित श्रम भी आनन्द में परिवर्तित हो जाता है।

ऐसे आत्मप्रेरित कार्य में ही मनुष्य अपने श्रेष्ठ गुणों का विकास कर सकता है। और श्रेष्ठ गुणों के विकास के बाद ही वह जीवन को सच्चे अर्थों में सार्थक बना सकता है।

जीवन में सर्वोच्च आनन्द की अनुभूति उपयोगी होने से है। किसी अविकसित कार्य को ढूँढ़कर उसकी सम्भावनाओं को देखने के बाद उसकी पूर्ति में अपने को खपा देना जितना सुखद कार्य है उसकी तुलना में सभी सुख तुच्छ हैं। हम सब ध्वजास्तम्भ के समान हैं। कई स्तम्भ बहुत ऊँचे होते हैं और कई छोटे। परन्तु ध्वजस्तम्भ की महत्ता उसकी छोटाई और ऊँचाई में नहीं, वरन् उस पर लगे ध्वज में है।

जब हम अपने कार्यमय जीवन के चरम भाग पर पहुँचें तो हमें गौरवपूर्वक कहने योग्य होना चाहिए कि हम चाहे अधिक ऊँचे स्तम्भवत् नहीं थे, पर हम पर जो ध्वजा लहराती थी वह संसार की सर्वश्रेष्ठ ध्वजा थी। अपना ध्येय निश्चित करते हुए यह ध्यान रखना होगा कि वह असाधारण न हो। हममें से बहुत लोग ऐसे हैं जो साधारण कुछ नहीं चाहते, सब कुछ असाधारण चाहते हैं, और असाधारण भी इतना कि जो स्वयं हमारी कल्पना से भी अगम्य हो।

हालीवुड के एक चित्र-निर्माता सेमुअल गोल्डविन ने एक बार कहा था: “मैं एक ऐसा चित्र बनाना चाहता हूँ जो भूकम्प से आरम्भ हो, और फिर उत्तरोत्तर क्लाइमैक्स की ओर बढ़े।”

हमारी सृष्टि का प्रारम्भ भी क्या ऐसे ही भूकम्प से नहीं हुआ था और आज क्या इस कोलाहल और अस्तव्यस्तता के मध्य हमें यह सुन्दर सृष्टि दिखाई नहीं दे रही है? सौन्दर्य बड़ी-बड़ी शक्तिशाली और स्थूल वस्तुओं से महान् होता है।

महानता विनाशकारी शक्तियों के विस्फोट में नहीं बल्कि निर्माण की सुन्दर, शान्त कृतियों में है। अरबों वर्ष पहले विश्व में दो शक्तियाँ कार्य कर रही थीं। एक ओर भूकम्पों एवं भीषण अग्निकांडों की विभीषिका थी। दूसरी

ओर, वनस्पतियों तथा जीवधारियों के बीजरूप सूक्ष्म जीवकण। दोनों में संघर्ष चल रहा था। अन्त में भूकम्पों और अग्निकांडों का अन्त हो गया और विश्व इन्हीं सूक्ष्म जीवकणों के बल पर जीवित रह गया। उस समय कौन यह कल्पना कर सका होगा कि भीषण भूकम्पों और अग्निकांडों के बीच इन जीवकणों का जीवित रहना सम्भव होगा, पर इन्हीं जीवकणों ने जीवन, कला और संस्कृति को जन्म दिया।

हमें महानता की झूठी कल्पनाओं से प्रभावित न होकर अपनी स्थिति के अनुकूल ही स्वप्न लेना चाहिए। दिवास्वप्न बुरे नहीं; स्वप्न ऊँचा न होगा तो चेष्टा में भी विशालता और समर्थता नहीं आएगी; किन्तु यदि कल्पना-जगत् में ही विचरण करते रहोगे तो भी तुम्हारा जीवन अवास्तविक हो जाएगा। जो स्वप्न लो उसे पूरा करने के लिए क्रियात्मक उपाय का भी आश्रय लो। तुम्हारे स्वप्न तुम्हारी प्रेरणा के स्रोत होने चाहिए। उनसे तुम्हें बल मिलना चाहिए।

जो स्वप्न पुरुषार्थ में परिवर्तित नहीं होगा वह व्यक्तित्व को और भी खंडित कर देगा। अपनी प्रवृत्ति के अनुकूल कार्यक्षेत्र चुनकर ही सफलता पाने के सम्बन्ध में आइंस्टीन ने अपने अनुभव के आधार पर लिखा था: “मैं वही कार्य करता हूँ, जिसको करने के लिए मेरी निज की प्रकृति मुझे प्रेरित करती है। जीवन का पूरा आनन्दमूलक सदुपयोग करने के लिए मनुष्य को लगन से काम करना चाहिए। उसी के अनुपात में खेलना चाहिए और उतना ही मौन भी रहना चाहिए।”

हमारे अधिकांश उच्चादर्श हमारी वर्तमान कामनाओं तथा भावी कामनाओं के बीच संघर्ष को जन्म देते हैं। हम-तुम जैसे साधारण व्यक्तियों के लिए इन उच्चादर्शों को एकदम पचा सकना असम्भव है।

अपने स्वभाव के अनुकूल क्षेत्र का चुनाव न होने से जीवन विषम संघर्षों का शिकार बन जाता है। इस विषमता को तथा जीवन की अन्य विषमताओं को दूर करने का एक ही उपाय है: अपनी स्वाभाविक ऐन्द्रिय वृत्तियों का संयम और समन्वय; उन्हें उपयोगी कार्यों में लगाना।

स्वभाव में बसी प्रवृत्तियों के उपयोग से ही जीवन में शान्ति आती है। इन परस्पर-विरोधी प्रवृत्तियों में साम्य स्थापित करना और उनका सृजनात्मक प्रयोग करना जीवन के महानतम कार्यों में से है।

जीवन के प्रारम्भ में हम सबकी नैसर्गिक प्रवृत्तियाँ स्वार्थपूर्ण ही होती हैं, परन्तु हमारी सफलता इसमें है कि हम किसी सीमा तक उनका उपयोग परमार्थ में करते हैं। जीवन कई विरोधी तत्त्वों से बना है। उन विरोधी प्रतीत होने वाले तत्त्वों में व्यवस्था और सामंजस्य होने से ही जीवन की गति में वेग रह सकता है।

- “सफल जीवन” से साधार

**मनुष्यों परमात्मा मित्रा के समान
सब सुख देने वाला, संसार को
उत्पन्न करने वाला और पालन करने
वाला है। सत्य का उपेक्ष करने
वाला है।**

**सभी अच्छे बुरे कर्मों को देखने
वाला, सर्व व्यापक अंतर्दामी और
न्यायाधीश है इसलिए उस परमात्मा
की उपासना करो। उसकी उपासना
से ही सुख प्राप्त होगा।**

- स्वामी दयानन्द

जागो, सुनो, सुनाओ सत्यार्थ प्रकाश तुम्हें जगाने आया है

□ रामभाई मुंगे गुरुजी

सत्यार्थ प्रकाश भूमिका में लिखा है कि, मनुष्य जन्म का होना सत्या सत्य के निर्णय करने कराने के लिए है, न कि वाद विवाद विरोध करने कराने के लिए। विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश, लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्या सत्य का स्वरूप समर्पित कर दें।

“ओ३म्” यह केवल परमात्मा ही का नाम है। जहाँ-जहाँ स्तुति प्रार्थना उपासना सर्वत्र, व्यापक, शुद्ध सनातन, सृष्टिकर्ता आदि विशेषण लिखे हैं, वहाँ वही इन नामों से परमेश्वर का ग्रहण होता है।

जहाँ-जहाँ इच्छा द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख, अल्पज्ञ आदि विशेषण हो वहाँ वहाँ जीव का ग्रहण होता है।

मनुष्य का आत्मा सत्य असत्य जाननेवाला होता है, तथापि अपनी प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्या आदि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य से झुक जाता है। (भूमिका)

जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है, वही मनुष्य कहाता है, और जो स्वार्थी होकर परहानी मात्र करता रहता है, वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।

जैसे परमेश्वर के न्याय, सत्य, दया, सर्व सामर्थ्य और सर्वज्ञत्वादि अनंत गुण हैं, वैसे अन्य किसी जड़ पदार्थ वा जीव के नहीं हैं। जो पदार्थ सत्य है, उसके गुण कर्म स्वभाव भी सत्य होते हैं। इसलिए मनुष्यों को योग्य है कि परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करे, उससे भिन्न की कभी न करे।

समुल्लास 2- जैसे पृथ्वी जड़ है, वैसे ही सूर्यादि लोक हैं, और वे ताप और प्रकाशादि भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते। जिसके शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है तब उसको आरोग्य, बुद्धि बल, पराक्रम बढ़के बहुत सुख की प्राप्ति होती है।

समुल्लास 3- संतानो को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभाव रूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य, और संबन्धियों का मुख्य कर्म है।

संस्कार विधि में लिखा है- शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं, और संतान अत्यंत योग्य होते हैं इसलिए संस्कारों का करना मनुष्यों को अति उचित है।

जो पुरुष विद्वान और स्त्री अविदुषी और स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान हो तो नित्य प्रति देवासुर संग्राम घर में मचा रहे, फिर सुख कहाँ?

जिस-जिस कर्म से तृप्त अर्थात् माता पितादि, पितर प्रसन्न हों और जो श्रद्धा से किये जाय उसका नाम तर्पण है। परन्तु यह जीवितों के लिए हैं, मृतकों के लिए नहीं। जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतांतर का विरुद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। (अनुभूमिका सत्यार्थ प्रकाश उत्तरार्थ)।

कोई कहे की माता पिता के बिना संतान उत्पत्ति हुई, किसी ने मृतक जीवन किये, पहाड़ उठाये, समुद्र में पत्थर तैराये, चंद्रमा के टुकड़े किए, परमेश्वर का अवतार हुवा, मनुष्य के सिंग देखे, वंध्या के पुत्री का विवाह किया आदि सब असंभव है, क्योंकि यह सब बातें सृष्टि क्रमके विरुद्ध हैं।

समुल्लास 4- दिन और रात्रि के सन्धि में अर्थात् सूर्योदय और अस्त समय में परमेश्वर का ध्यान और अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिए।

जो ब्राह्मणादि उत्तम करते हैं वे हि ब्राह्मणादि और नीच भी उत्तम वर्ण के उत्तम स्वभाव वाला होवे तो उनको भी उत्तम वर्ण और जो उत्तम वर्णस्थ होके नीच काम करें तो उसको नीच वर्ण में गिनना चाहिए।

यदि तुमको सत्य मत ग्रहण करने की इच्छा हो तो वैदिक मत को ग्रहण करो।

समुल्लास 5- संन्यासियों का मुख्य कर्म यही है, कि सब गृहस्थादि आश्रमों को सब प्रकार के व्यवहारों का सत्य निश्चय करा अधर्म व्यवहारों से छुड़ा सब संशयों का छेदन कर सत्य धर्म युक्त व्यवहारों में प्रवृत्त कराया करें।

समुल्लास 6- जैसा राजा होता है, वैसी ही प्रजा होती है। राजा और राज पुरुषों को उचित है कि कभी दुष्टाचार न करें किंतु सब दिन धर्म न्याय से वर्तकर सबके सुधार के द्रष्टा बनें। संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य कर्तव्य है, अर्थात् सामाजिक, आत्मिक और शारीरिक उन्नति करना।

समुल्लास 7- जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शनि निवृत्त हो जाना है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं।

जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करना वह कृतघ्न है, और महामूर्ख भी होना है, क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत के इस जगत के सब पदार्थ सुख के लिए दे रखे हैं, उसके गुण भूल जाना ईश्वर को ही न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है।

जैसे कोई अनन्त आकाश को कहे की, गर्भ में आया या मुट्ठी में धर लिया ऐसा कहना कभी सच नहीं हो सकता, क्योंकि आकाश अनंत और सब में व्यापक है। इससे न आकाश बाहर आना और न भीतर जाता वैसे ही अनन्तर सर्वव्यापक परमात्मा के होने से उसका आना जाना कभी सिद्ध नहीं हो सकता।

जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है, उसको वैसा ही वर्तमान करना चाहिए अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि प्राप्ति के लिए परमेश्वर की प्रार्थना करें, उसके लिए जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करें, अर्थात् अपने पुरुषार्थ के उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है।

जब तक होम करने का प्रचार रहा तब तक भारत देश रोग रहित और सुख पूर्ण था। अब भी प्रचार हो, करे तो वैसा ही हो जाएँ।

इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचना विशेष आदि ज्ञानादि गुणों प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है।

चारो वेदों में ऐसा कही नहीं लिखा जिसमें अनेक ईश्वर सिद्ध हो सके किन्तु यह तो लिखा है कि ईश्वर एक हैं।

जो परमात्मा उन आदि सृष्टि के ऋषियों को वेद विद्या न पढ़ाता और व अन्यो को न पढ़ाते तो सब लोग अविद्वान् ही रह जाते।

वेद परमेश्वरोक्त है, इन्हीं के अनुसार सब लोगों को चलना चाहिए और जो कोई किसी से पूछ की तुम्हारा क्या मत है तो यही उत्तर देना की, हमारा मत वेद (ज्ञान) अर्थात् जो कुछ वेदों में कहा है, हम मानते हैं। जो परमात्मा वेदों का प्रकाश न करें तो कोई कुछ भी न बना सके, इसलिए वेद परमेश्वरोक्त है, इन्हीं के अनुसार सब लोगों को चलना चाहिए।

समुल्लास 8- देखो, कोई भी आजतक ईश्वर कृत सृष्टि क्रम को

बदलने द्वारा नहीं हुवा है और न होगा जैसा अनादि सिद्ध परमेश्वर सिद्ध नेत्र से देखने और कानों से सुनने का प्रबंध किया है, उसको कोई भी योगी बदल नहीं सकता। जीव ईश्वर कभी नहीं हो सकता।

कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजापर माता-पिता के समान कृपा न्याय दया के साथ विदेशियों का राज्य भी सुखदायक नहीं है।

समुल्लास 9- जो कोई दुःख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहे वह अधर्म को छोड़ धर्म अवश्य करे। क्योंकि दुःख का पापचरण और सुखका धर्मा चरण मूल कारण हैं।

पूर्व जन्म के पुण्य पाप के अनुसार वर्तमान जन्म और वर्तमान तथा पूर्व जन्म के कर्मानुसार भविष्यत जन्म होते हैं।

समुल्लास 10- जो बाहर भीतर की पवित्रता करनी, सत्य भाषणा दिआचरण करना है वह जहाँ कही करेगा, आचरण और धर्म भ्रष्ट कभी न होगा और जो आर्यावर्त में रहकर दुष्टाचार करेगा वही धर्म और आचार भ्रष्ट कहावेगा।

आपस की फूट से कौरव और पांडव यादव वंश का सत्यानाश हो गया। परन्तु अब तक भी वही रोग पिछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दुःख सागर में डुबा मारेगा। अनेक प्रकार के मद्य, गांजा, भांग, अफीम आदि जो बुद्धि का नाश करनेवाले पदार्थ हैं, उनका सेवन कभी न करें। देखो जब आर्यों का राज्य था तब महा उपकारक गाय आदि परोपकारी पशु आदि नहीं मारे जाते थे, तभी आर्यावर्त अन्य भूगोल देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्तते थे, क्योंकि दुध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न रस बहुत होते थे। इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करनेवाले जानिएगा। परमात्मा सबके मन में सत्य का ऐसा अंकूर डाले कि जिससे मिथ्या मत शीघ्र ही प्रलय को प्राप्त हो।

समुल्लास 11 के निम्न सूक्तिया हैं-

क्या पाषाणादि मूर्तिपूजा से परमेश्वर को ध्यान में कभी लाया जा सकता है? नहीं, नहीं मूर्ति पूजा सिद्धी नहीं किन्तु वह एक बड़ी खाई है, जिसमें गिरकर चकनाचूर हो जाता है।

जैसे शक्कर, शक्कर कहने से मुख मिठा नहीं हो जाता वैसे सत्य भाषणादि काम किये बिना “राम, राम” कृष्ण-कृष्ण कहने से कुछ भी नहीं होगा। कलियुग नाम काल का है, काल निष्कीय होने से कुछ अधर्म धर्म के काज में साधक बाधक नहीं। पारसमणि कहा जाता है, पारस मणि पत्थर है, यह बात झुठी है, पारसमणि किसी ने देखा नहीं, परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोह रूपी द्रिद्रि विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।

जब लोक वर्तमान और भविष्यत में उन्नतिशील नहीं होते तब लोक भारत और अन्य देशस्थ मनुष्यों की बुद्धि नहीं होती। जब बुद्धि के कारण वेदादि सब सत्य शास्त्रों का पाठन ब्रह्मचर्यादि आश्रमों के यथावत् अनुष्ठान, सत्योपदेशक होते हैं, तभी देशोन्नति होती है।

जो दुष्ट कर्मचारी द्विज को श्रेष्ठ, कर्मकार शूद्र

को नीच माने तो इसके परे पक्षपात, अन्याय, अधर्म, दूसरा अधिक क्या होगा।

जो विद्यादि सदगुणों में गुरुत्व नहीं हैं। झूठ, मुठ, कंठी, तिलक, वेद विरुद्ध मन्त्रोपदेश करनेवाले हैं, वे गुरु ही नहीं गडरिये हैं।

जो धर्म युक्त काम करे, सदा परोपकार में प्रवृत्त हो कोई दुर्गुण उसमें न हो, विद्वान सत्योपदेश से सबका उपकार करे उसको साधू कहते हैं। जैसे गृहस्थ व्यवहार और स्वार्थ में परिश्रम करते हैं, उससे अधिक परोपकार करने में संन्यासी भी तत्पर रहे, तभी सब आश्रम उन्नति पर रहें। उत्तम दाता उसको कहते हैं, जो देश काल को जान कर सत्य विद्या धर्म के अन्न रूप परोपकारार्थ देवें। जिस बात में ये सहस्रों एकमत हो, वह वेद मत ग्राह्य है और जिसमें परस्पर विरोध हो, वह कल्पित झुठा, अधर्म अग्राह्य है।

जब सत्पुरुष उत्पन्न होकर सत्योपदेश करते हैं, तभी अंध परम्परा नष्ट होकर प्रकाश की परम्परा चलती है।

नामस्मरण इस प्रकार करना चाहिए जिसे “न्यायकारी” ईश्वर का एक नाम है। इस नाम से जो इसका अर्थ है कि जैसे पक्षपात सहित होकर परमात्मा सबका यथावत् न्याय करता है, वैसे उसको ग्रहण कर न्याय युक्त व्यवहार सर्वदा करना अन्याय कभी न करना इस प्रकार अनेक नाम से भी मनुष्य का कल्याण हो सकता है।

समुल्लास 12- अनुभूमिका में लिखा है,

जब विद्वान लोगों में सत्य असत्य का निश्चय नहीं होता तब अविद्वानों को महा अंधकार में पड़कर बहुत दुःख उठाना पड़ता है। इसलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद वा लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। प्रथम अपने दोष देख निकाल के, पश्चात दूसरे के दोषों में दृष्टि देके निकाले।

पशु मारके होम करना वेदादि शास्त्रों में कही नहीं लिखा और मृतकोका श्राद्ध, तर्पण करना कपोल कल्पित हैं।

शोक हं, चारवाक, आभाणक, बौद्ध और जैनियों पर कि उन्होंने मूल चार वेदों की संहिताओं को भी न सूना, न देखा और न किसी विद्वान से पढ़ा। इसलिए नष्ट, भ्रष्ट बुद्धि होकर उटपटांग वेदों की निंदा करने लगे। दुष्ट वाममागियों की प्रमाण शून्य कपोल कल्पित भ्रष्ट टिकाओं को देखकर वेदों से विरोधी होकर अविद्या रूपी अगाध समुद्र में जा गिरे।

वेदों में मांस खाना कहीं नहीं लिखा। इसलिए इत्यादि मिथ्या बातों पर पाप उन टीकाकारों को ओर जिन्होंने वेदों के जाने सूने बिना मनमानी निंदा की है निःसंदेह उनको लगेगा।

समुल्लास 13- सब मनुष्यों को उचित है कि सबके मत विषयक पुस्तकों को समझकर कुछ सम्मति वा असम्मति देवें वा लिखें नहीं तो सुना करें। अनुभूमिका में लिखा है, मनुष्य का आत्मा यथा योग्य सत्यासत्य के निर्णय करने का सामर्थ्य रखता है।

समुल्लास 14- सज्जनों कि यही रीति है कि अपने वा परायें दोषों को दोष और गुणों को गुण जानकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें और हठियों हठ का हठ, दुराग्रह न्यून करें, करावें।

- मन्त्री, आ.स.दयानन्द नगर, अमरखेड, जिला-यवतमाल, महाराष्ट्र

सत्यार्थ प्रकाश से

ओ३म् शन्नो मित्रः शं वरुणः

शन्नो भवत्सर्व्यमा।

शन्नोऽन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो

विष्णुरूक्रमः।

नमो ब्रह्मणे नमस्ते बायो त्वमेव

प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।

त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मं वदिष्यामि

ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि

तन्मामवतु तद्धक्तामवतु।

अवतु माम् वतु वक्तारमा।

ओ३म् शन्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थः ‘ओ३म्’ यह ओंकार

शब्द परमेश्वर के नामों में से

सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें

अ. उ और म तीन अक्षर

मिलकर एक (ओ३म्) समुदाय

हुआ है। इस एक नाम से

परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं,

जैसे अकार से विराट, अग्नि

और विश्वादि। उकार से

हिरण्यगर्भ, वायु और तेजसादि।

मकार से ईश्वर, आदित्य और

प्राज्ञादि नामों का वाचक और

ग्राहक है। उसका ऐसा ही

वेदादि सत्यशास्त्रों में स्पष्ट

व्याख्यान किया है कि

प्रकरणानुकूल ये सब नाम

परमेश्वर के ही हैं।

- स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्यो महर्षि दयानन्द का कहना मानो। वैदिक धर्म अपनाओ-आर्यसमाज बचाओ

□ अश्विनी कुमार पाठक आर्य

मैंने आर्यसमाज के कई विद्वानों से यह प्रश्न पूछा कि संसार में वैदिक धर्म का कहीं अस्तित्व है? इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर कोई भी विद्वान दे नहीं सका। जिस पर मुझे बहुत दुःख हुआ कि हम लोग आर्यसमाज के सत्संगों तथा अन्य उत्सवों पर वैदिक धर्म की जय के उद्घोष तो खूब लगाते हैं परन्तु सरकारी कागज पत्रों में धर्म के खाने में हिन्दू ही लिखते-लिखाते हैं जो कि कोई धर्म ही नहीं है। क्योंकि हिन्दू धर्म की कोई परिभाषा करना ही कठिन है। हिन्दुओं में अलग-अलग विचारधारा के लोग हैं। इन का कोई एक धार्मिक सिद्धान्त नहीं है कोई ईश्वर को मानता है, कोई नहीं मानता। कोई ईश्वर को निराकार मानता है और कोई साकार मानकर मूर्ति पूजा करता है। कोई मांसाहार पाप समझता है और कोई अपने देवी-देवताओं को भी शराब, मांस का भोग लगाता है। इसलिये कौन ठीक है और कौन गलत है? हिन्दुओं के निश्चय करना ही कठिन है।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने वेद के अनुसार हमारा धर्म वैदिक धर्म बताया था और यह कहा था कि हमारा प्राचीन नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। क्योंकि यह नाम हमारे किसी भी धर्म ग्रन्थ में नहीं लिखा। उन्होंने 31 दिसम्बर 1880 ई. को आर्यसमाज मुलतान के मंत्री मास्टर दयाराम वर्मा को एक पत्र में लिखा था कि जनगणना में सब लोग धर्म के खाने में वैदिक धर्म और जाति के खाने में आर्य लिखायें परन्तु आर्यसमाज के नेताओं ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। जबकि इस बात का खूब प्रचार होना चाहिये था। ऐसा न होने के कारण आर्यसमाज के अधिकांश लोग धर्म के खाने में हिन्दू ही लिखाते जा रहे हैं। इसलिये हमारे परिवार भी वैदिक धर्म नहीं बन सके। देखने में आया है कि ज्यादा परिवार आर्य समाजी अथवा वैदिक धर्मी नहीं हैं। आखिर किस-किस का नाम लिया जाये। हमारे कई बड़े-बड़े स्वर्गवासी नेताओं के परिवार भी आज आर्य समाजी नहीं हैं। अगर हमारे परिवारों में वैदिक धर्म को मान्यता दी जाती तो हमारे परिवार वैदिक धर्मी ही कहलाते और आर्यसमाज के सत्संगों से वह दूर न रहते। आर्यसमाज के पुराने सदस्य दिवंगत हो रहे हैं और नये बन नहीं रहे। इस तरह आर्यसमाज कब तक चलेगा? इसलिये जब तक वैदिक धर्म परिवारिक धर्म नहीं बनेगा तब तक आर्यसमाज प्रगति नहीं कर सकता। वेद प्रचार की भी ठोस योजना बननी चाहिये किसी से डरना नहीं।

पौराणिक सनातन धर्म का प्रचार तो अपने आप ही परिवार की महिलाओं द्वारा हो रहा है जबकि आर्य समाजियों की पत्नियाँ कोई तो राधा स्वामी गुरु को और कोई ब्रह्माकुमारी मत अथवा पौराणिक पूजा पाठ में लगी हुई है और कभी-कभी आर्यसमाज के हवन आदि के कार्यक्रमों में आ जाती है। इसलिये हमारी सन्तानें भी दुविधा में रहती हैं कि कौन ठीक और कौन गलत है। आर्य नेता इस बारे में विचार करें तथा वैदिक धर्म सभी कागज पत्रों में लिखने लिखाने का प्रचार करें तभी वैदिक धर्म अस्तित्व में आ पायेगा।

हिन्दुस्तान के नागरिक हैं इसलिये हम हिन्दु भी कहला सकते हैं।

हिन्दू समाज के अंग तो हैं ही। एक आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जिसे हिन्दुओं की चिन्ता है जो आज तक इनकी रक्षा में प्रयत्नशील रहा है चाहे कोई माने अथवा न माने तथाकथित सनातनधर्मी लोग तो पाखण्ड और अन्धविश्वास को ही धर्म समझकर बढ़ाते जा रहे हैं। इसलिये आर्यसमाज अपने कर्तव्य को पहिचाने और यह प्रचार करता रहे कि हमारे पूर्वज श्रीराम, श्रीकृष्ण आर्य ही थे न कि हिन्दू और हम भी गर्व से अपने आपको आर्य कहें कहलायें। कवि की पंक्तियाँ सब याद रखें-

आर्य हमारा नाम है, वैदिक हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा ईश है, यज्ञ योग हमारा कर्म।
सत्य हमारा लक्ष्य है, गायत्री महामन्त्रम्।
भारत हमारा देश है, सदा रहे स्वतन्त्रम्॥

अब उड़ीसा के स्वामी धर्मानन्द ने 200 परिवारों को वैदिक धर्म की दीक्षा दी है। सब जगह यह दीक्षा दें सब आर्य समाजों में यह दीक्षा दी जानी चाहिये तभी हमारे परिवार भी आर्य समाजी बनेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा को केन्द्र सरकार से वैदिक धर्म को मान्यता प्राप्त के लिये आवेदन करना चाहिये। किसी धर्म अथवा मत को मानने वाले ही अपने धर्म के पक्के होते हैं। संस्थायें तो हमेशा नहीं चला करती। परन्तु धर्म अथवा मत तो चलते रहते हैं। जनगणना का स्टाफ तो यह कह कर टाल देता है कि उनके पास वैदिक धर्म का तो नाम ही नहीं है।

- सी-233, नानकपुरा, नई दिल्ली-110021

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

‘टंकारा समाचार’ उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से ‘टंकारा समाचार’ की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

‘टंकारा समाचार’ का वार्षिक शुल्क 100/- रुपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रुपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

જ્ય દયાનન્દ ઋષિવર પ્રવર

રમેશ મહેતા મો. ૦૮૪૨૭૦૦૧૧૯ / Email:- pt.rammehta@gmail.com

મહર્ષિ સ્વામી દયાનન્દ સરસ્વતી
(૧૮૨૪ - ૧૮૮૩) નું મહાન ચરિત્ર

(સન્દર્ભ ગ્રન્થ : દિવંગત પ્રા. ડૉ. કુશલદેવ શાસ્ત્રી રચિત
મહર્ષિ દયાનન્દ : કાલ અને કૃતિત્વ

ઇતિહાસાચાર્ય નિરંજનદેવ શાસ્ત્રીએ કહ્યું હતું :

કોઈ પ્રભુ-ભક્ત છે તો વિદ્વાન નથી,
કોઈ વિદ્વાન છે તો યોગી નથી,
કોઈ યોગી છે તો સુધારક નથી,
કોઈ સુધારક છે તો દિલેર નથી,
કોઈ દિલેર છે તો બ્રહ્મચારી નથી,
કોઈ બ્રહ્મચારી છે તો વક્તા નથી,
કોઈ વક્તા છે તો લેખક નથી,
કોઈ લેખક છે તો સદાચારી નથી,
કોઈ સદાચારી છે તો પરોપકારી નથી,
કોઈ પરોપકારી છે તો કર્મક નથી,
કોઈ કર્મક છે તો ત્યાગી નથી,
કોઈ ત્યાગી છે તો દેશભક્ત નથી,
કોઈ દેશભક્ત છે તો વેદભક્ત નથી,
કોઈ કોઈ વેદભક્ત છે તો ઉદાર નથી,
કોઈ ઉદાર છે તો શુદ્ધાહારી નથી,
કોઈ શુદ્ધાહારી છે તો યોદ્ધા નથી,
કોઈ યોદ્ધા છે તો સરલ નથી,
કોઈ સરલ છે તો સુન્દર નથી,
કોઈ સુન્દર છે તો બલિષ્ઠ નથી,
કોઈ બલિષ્ઠ છે તો દયાળુ નથી,
કોઈ દયાળુ છે તો સંયમી નથી.

પરંતુ જો તમે આ બધા ગુણ કોઈ એક જ વ્યક્તિમાં જોવા માંગતા હો તો મહર્ષિ સ્વામી દયાનન્દજીના દર્શન કરો,
નિષ્પક્ષ થઈને દર્શન કરો.

જય - જય સદ્ગુણ - સદન સાધુ સદ્ધર્મ સુધારક,
જય જય વિમલ વિવેક વિબુધ વર વેદ - વિચારક.
જય ધર્મ - ધુરન્ધર ધીર ધર, આત્મજાતિના ધ્રુવ ધવલ,
જય દયાનન્દ ઋષિવર પ્રવર, દેશભક્તિ-સર શુચિ કમલ.

જય અતિ અનુપમ અમલ ઉચ્ચ ઉદેશ્ય ઉગ્રગર,
સંયમ સુકૃત સ્નેહ શીલ સાહસના સાગર.
આત્મત્યાગ - અનુરાગ - યોગ મૂરતિ મન - ભાવન,
ભવભય - ભીષણ ભૂરિ ભ્રાન્તિ ભર્મ - ભેદ - નસાવન.

જય પ્રતિભાપૂર્ણ પયોધિ પ્રિય,
પુણ્ય - પ્રભા - વિકસિત કરન,
જય દયાનન્દ ઋષિવર પ્રવર
દુઃખિન-દુઃખ - દારુણ - હરણ.

જય ગુરુ ગૌરવરૂપ શુદ્ધ સત્યાર્થપ્રકાશ - પ્રકાશક,
બ્રહ્મચર્ય વ્રત-વીર દમ્ભ દાહકના નાશક,
પૂરણ - પ્રકટ - પ્રતાપ - પ્રાણના પ્રણના પાલક,
મુનિવર જીવનમુક્ત વિપુલ વિધ્નોના ઘાચક.
જય ભારત ભૂષણ વિમલ મતિ,
સદય - હૃદય દૂષણ - દલન,
જય દયાનન્દ ઋષિવર પ્રવર - છલ, બલ, દલ, ના બલન.

જય નિર્ભય નિષ્કપટ નિરન્તર નુત નિષ્કામી,
દૃઢવ્રત પ્રતિપલ, શૂરવીર સાચ્યા નર નામી,
જયતિ જયતિ જય જયતિ જય.

જય! જય! ! જય! ! ! પૌરુષી પુરુષ પ્રભુવરના પ્યારા,
આપી આપીને ઉપદેશ દેશના કલેશ નિવાર્યા
વૈદિક બોધ વિશુદ્ધ વિશ્વભરને બતાવ્યા,
પ્રતિભાના પિયૂષ પ્રેમથી અમને પિવડાવ્યા,
ચારે તરફ નિજ ચરિતથી ફેલાવ્યા કીરત કિરણ
જય! જય! ! જય! ! ! પૌરુષી પુરુષ પ્રભુવરના પ્યારા.
જય! જય! ! જય! ! ! પૌરુષી પુરુષ પ્રભુવરના પ્યારા
જય! જય! ! જય! ! ! પૌરુષી પુરુષ પ્રભુવરના પ્યારા

ઋષિ દયાનન્દના મિશનના પ્રચાર-પ્રસાર માટે ટંકારાસમાચારના
વધુમાં વધુ ગ્રાહક નોંધવીને સહયોગ આપો

ટંકારાસમાચાર આર્યજગતનું એક માત્ર બહુભાષીય માસિક પત્ર છે જેમાં વિદ્વાસભર લેખો પ્રકાશિત થાય છે.
વાર્ષિક લવાજમ છે માત્ર એકસો રૂપિયા અને આજીવન માત્ર પાંચસો રૂપિયા
સમ્પર્ક કરો: શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ દ્વારા:
આર્યસમાજ અનારકલી, મન્દિર માર્ગ નવી દિલ્હી ૧૧૦૦૦૧૧

विवेकशील जीवन जीने में ही मनुष्य की चरितार्थता

□ एस.आर. गुप्ता

एक बच्चा ध्यान से नाली के गंदे पानी में बजबजाते कीड़ों को देख रहा था। उसे वे कीड़े बड़े सुंदर लग रहे थे और साथ ही दुख भी हो रहा था कि ये कैसे गंदे पानी में पड़े हैं। उसने सावधानी से नाली के गंदे कीड़ों को उठाया और एक टब में डाल दिया जिसमें साफ पानी भरा हुआ था। कुछ दिनों के बाद ही वो सारे कीड़े मर गए। नाली के कीड़े कितने भी सुंदर क्यों न हों वे गंदे पानी में ही पैदा होते हैं और उसी से खुराक ग्रहण कर ज़िंदा रहते हैं। वही उनका स्वर्ग है। सुअर जैसा प्राणी भी गंदगी और कीचड़ में लेट कर ही प्रसन्नता पाता है।

वस्तुतः जो भी प्राणी हैं वो सब अपने जन्मजात प्राकृतिक परिवेश से ही उत्पन्न होते हैं, उसी में परवरिश पाते हैं और उसी में खुश रहते हैं। इसीलिए कोई भी प्राणी जब तक उसका जीवन संकट में न हो वह अपना परिवेश बदलने की नहीं सोचता। लेकिन मनुष्य? कई मनुष्य अत्यंत दयनीय स्थितियों में पैदा होते हैं। घोर अभाव, निर्धनता व अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों में आँखें खोलते हैं और उसी को स्वीकार कर निश्चिंत बैठे रहते हैं। कई बार उनमें और गंदी नाली के कीड़ों की ज़िंदगी में कोई अंतर नहीं होता।

बेशक नाली के कीड़े के लिए वह स्थिति विषम या प्रतिकूल नहीं लेकिन मनुष्य के लिए किसी भी सूरत में सही नहीं कही जा सकती। गंदी नाली के कीड़े के सामने मात्र उसकी उदरपूर्ति का प्रश्न है। उसके सामने सामाजिक अथवा आर्थिक विकास का प्रश्न नहीं है। उसके समक्ष नैतिकता व चरित्र निर्माण की समस्या नहीं है। मनुष्य के सामने उसके सर्वांगीण विकास का प्रश्न है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ उसके लिए अनिवार्य हैं। मनुष्य भी एक सामाजिक प्राणी है लेकिन अन्य प्राणियों से अलग है उसका समाज व सामाजिकता। सभी जीवों का अपना समाज होता है लेकिन मनुष्य का समाज उसकी

संस्कृति से विकसित हुआ है।

मनुष्य की एक संस्कृति है जिसको अपनाकर वह सभ्य बनता है। एक दायरे में रह कर वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ हासिल करता है। देश काल के अनुसार धर्म का पालन अनिवार्य है। धर्म जीवन को संबल प्रदान करता है, हमारी संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने में सहायक होता है। वास्तव में वे सभी तत्त्व जो जीवन को सकारात्मकता प्रदान करते हैं धर्म के अंतर्गत आते हैं। अच्छी आदतों या सद्गुणों का समूह ही धर्म है। अर्थोपार्जन भी अनिवार्य है लेकिन वो भी पूर्ण रूप से धर्मसम्मत होना चाहिए। अर्थोपार्जन में चारित्रिक या नैतिक पतन नहीं होना चाहिए।

काम वह तत्त्व है जो सृष्टि के विकास के लिए अनिवार्य है अतः इसकी उपेक्षा संभव ही नहीं। काम के अभाव में धर्म, अर्थ अथवा मोक्ष ये तीनों पुरुषार्थ न तो अपेक्षित ही हैं और न संभव ही लेकिन काम में संतुलन और मर्यादा अनिवार्य है। काम की अधिकता अथवा लोभ ही अमर्यादित अथवा अनैतिक अर्थोपार्जन के लिए उत्तरदायी है। इसी से धर्म का क्षय होता है। मोक्ष को लोग प्रायः संसार से मुक्ति के रूप में देखते हैं लेकिन वास्तविक मोक्ष है दुर्भावनाओं व नकारात्मकता से मुक्ति और यही मुक्ति मनुष्य को गंदी नाली का कीड़ा बनने से रोकती है, उसमें उदात्त व परिष्कृत जीवन शैली का विकास करती है। इसी से संस्कृति का विकास होता है और संस्कृति से ही मनुष्य का विकास संभव है।

- ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन नं. 09555622323

दान से
धन में कोई कमी नहीं आती
दान विपत्तियों
को खा जाता है।

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजे हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उद्धार होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि 'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा' के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

समाचार दर्पण

“टंकारा श्री” श्रीमती अरूणा सतीजा राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित

“टंकारा श्री” की सहयोगी सदस्या श्रीमती अरूणा सतीजा धर्मपत्नी श्री मनोहर लाल सतीजा (जयपुर) को राजस्थान सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा अन्तराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस 1 अक्टूबर 2014 के अवसर पर राज्य स्तरीय वृद्धजन सम्मान समारोह में वृद्ध कल्याण, सामाजिक, सांस्कृतिक, कला, साहित्य एवं सामाजिक क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, श्रीफल एवं शाल ओढ़ाकर आदरणीय राज्यमन्त्री श्री अरूण चतुर्वेदी जी द्वारा सम्मानित किया गया। आप पिछले दस वर्षों से ऋषि जन्मभूमि टंकारा से जुड़ी हुई हैं। इन वर्षों में सैकड़ों नई हज़ारों टंकारा समाचार के सदस्य बनाए हैं। आपकी इन सफलताओं के पीछे आपके सुयोग्य पति श्री मनोहर लाल सतीजा का सहयोग सराहनीय है।

टंकारा ट्रस्ट श्रीमती सतीजा जी को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए उनकी दीर्घायु एवं स्वास्थ्य लाभ की कामना करता है ताकि वे भविष्य में भी इसी तरह समाज सेवा के कार्यों में सक्रिय सहयोग करती रहें।



वसुंधरा राजे को सत्यार्थ प्रकाश भेंट



आर्य समाज के जिलाप्रधान अर्जुन देव चड्ढा की अगुवाई में रोटरी बिनानी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में श्रीमती राजे को केसरिया पगड़ी, गायत्री मन्त्र से सुसज्जित केसरिया दुपट्टा, मोतियों की माला व “ओ३म” का स्मृति चिन्ह भेंट कर प्रार्थनामन्त्रों का स्वस्तिवाचन मन्त्रोच्चार करते हुए सम्मान किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमरग्रंथ “सत्यार्थ प्रकाश” भी श्रीमती राजे को आर्य समाज द्वारा भेंट किया गया। आर्य समाज के जिलाप्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में श्रीमती राजे ने राजस्थान की विभिन्न जेलों में बंद 3500 कैदियारों की सजा कम की व 150 कैदियों की सजा माफ कर उन्हें रिहा किया गया।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार ‘उत्तराखण्ड गौरव’ से सम्मानित

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार को ‘उत्तराखण्ड गौरव’ के सम्मान से सम्मानित किया गया। डॉ. सुरेन्द्र कुमार को यह सम्मान वैदिक शिक्षा, संस्कृत भाषा वैदिक साहित्य के लेखन एवं प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान करने के फलस्वरूप दिया। इस भव्य अलंकरण समारोह में हिमालयन ड्रग्स के अध्यक्ष एवं उद्योगपति डॉ. एस. फारूख मुख्य अतिथि ले.जन., एच.बी. काला, विशिष्ट अतिथि डॉ. वी.के. जैन कुलपति दून विश्वविद्यालय, सोसायटी के अध्यक्ष श्री हर्षवर्धन आर्य एवं सचिव डॉ. आदित्य आर्य उपस्थित थे। इन्होंने कुलपति जी को स्मृतिचिन्ह, अभिनन्दन पत्र आदि देकर सम्मानित किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के शिक्षक, शिक्षकेत्तर एवं विद्यार्थी वर्ग ने इस सम्मान को पाने पर प्रसन्नता व्यक्त की है।

वैदिक योग साधक सम्मानित

राजस्थान स्वास्थ्य योग परिषद् की ओर से 41वां वार्षिक समारोह सम्पन्न हुआ। योग साधना केन्द्रों के श्रेष्ठ साधकों साधिकाओं और योग-परिवारों को राज्य के समाज कल्याण मन्त्री अरूण चतुर्वेदी ने सम्मानित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध वैदिक योग साधक, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राज.) के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल कर रहे थे। यशपाल यश ने कहा कि योग जीवन-मरण से मुक्ति का मार्ग है। विशेष आमंत्रित स्वामी प्रज्ञानानन्द ने योग को जीवन में ढालने की सलाह दी।

रस्ता चलना स्वच्छ
चाहे फेर हो
काम करना उत्तम
चाहे देर हो

आभार व्यक्त

प्रिय भाई श्री रामनाथ सहगल जी आज सुबह आपके निवास स्थान पर आया था। लेकिन आपसे मिलना ना हो सका। अजय जी से मिला। उन्होंने आपके बारे में पूरी सूचना दी। अस्तु आपके दर्शनों से तथा आपके आशीर्वाद से मुझे नितान्त प्रसन्नता होती।

जहां तक मुझे स्मरण है आप पिछले 70 वर्षों से एक स्वयं सेवक, एक कार्यकर्ता, सभी के प्रिय, सभी के हितैषी, सभी की सहायता करने के इच्छुक, सभी से प्यार से काम लेने वाले संयोजक, आर्य समाज के सभी नेताओं से व्यक्तिगत परिचय, आर्य परिवार के साधु, सन्तों का सम्मान करने वाले, सहायता करने वाले एक अपूर्व व्यक्तित्व के धनी। आर्य नेताओं में सर्वश्री प्रकाशवीर जी, पं. शिवकुमार जी, स्वामी आनन्द बोध जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी, श्री रामा राव वन्देमातरम् जी, श्री क्षतीष वेदालंकार जी, श्री अशोक कौशिक जी, श्री लक्ष्मीमल सिंघवी जी, श्री बुद्धदेव जी, आनन्द स्वामी जी महाराज, स्वामी दीक्षानन्द जी, पं. नरेन्द्र हैदराबाद छोटे बड़ों को अपना समझने वाले प्रियता प्रदान करने वाले एक श्रेष्ठ सज्जन हैं।

मेरी परम पिता परमात्मा से यही विनीत प्रथम प्रार्थना है कि हमारे इस श्रद्धेय भाई को शतायु प्रदान करें। आपकी सेवायें सभी के लिए अनन्त हैं, कितना लिख आपकी गौरवता पर विराम देना नहीं चाहता।

- टी.एस.के. कणन, मो. 09841036222



क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में **वानप्रस्थ साथक आश्रम, आर्यवन, रोजड़**, में 16 नवम्बर से 23 नवम्बर 2014 तक 8 दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविरार्थी 16 नवम्बर को सायंकाल 4 बजे तक शिविर स्थल पर पहुँच जावें। शिविर में क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ योग दर्शन के सूत्रों का अध्यापन, यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक, वैराग्य, अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर समर्पण, स्वस्वामी-सम्बन्ध तथा ममत्व को हटाने जैसे अनेकों सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया जाएगा। शिविर की दिनचर्या प्रातः 4.00 से रात्रि 6.30 बजे तक रहेगी।

अथर्ववेद ब्रह्म पारायण यज्ञ सम्पन्न

गोविन्दपुरी, रामनगर (सोडाला) में तीन दिवसीय अथर्ववेद ब्रह्म पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। डॉ. रामपाल विद्याभास्कर के ब्रह्मत्व में वेदपाठ हुआ। आयोजन के प्रत्येक सत्र में मधुरता का संचार हुआ। गोविन्दपुरी बस्ती में आर्य समाज की पहुँच नहीं है, फिर भी निवासियों ने वैदिक कर्म काण्ड के प्रति श्रद्धा एवं अपूर्व उत्साह दिखाया।

गुरुकुल होशंगाबाद का वार्षिकोत्सव

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) का 103वां वार्षिकोत्सव दिनांक 5,6,7 दिसम्बर 2014 को आयोजित किया जा रहा है। इस उत्सव में देश के ख्यात नाम विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर उपदेश व प्रवचन होंगे तथा अध्ययनरत ब्रह्मचारी छात्रों के पाणि तथा वाणी के मनोहर कार्यक्रम देखने को मिलेंगे। आप समस्त गुरुकुल प्रेमी सज्जनों से निवेदन है उक्त कार्यक्रम में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाये व विद्वानों के प्रवचनों से लाभ लें।

-: निमन्त्रण :-

वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन

छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुन्द जिले के **आर्षज्योति गुरुकुल आश्रम** को सरंगी परिसर में प्रान्तीय स्तर का एक बृहद "वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन" का आयोजन दिनांक 5,6,7, दिसम्बर 2014 को आयोजित किया जा रहा है। जिसमें भारतवर्ष के कोने-कोने से सौ से अधिक वैदिक विद्वानों का आगमन हो रहा है। सम्मेलन में वेद के सुक्ष्मतम विषयों पर चिन्तन, चर्चा व संगोष्ठी होगी साथ ही सस्वर वैदिक पाठों से वातावरण सुवापित होगा। भारतवर्ष के उच्चकोटि के साधु-संन्यासी, विद्वान, आचार्य सहित समाजसेवी महानुभाव व महामहिम राज्यपाल, माननीय मुख्यमन्त्री एवं मन्त्रीगणों के पधारने की सम्भावना है। आयोजन की भव्यता व महत्ता को सार्वजनिक करते हुए अनुरोध है कि इन तिथियों में किसी प्रकार का आयोजन अपने यहां न रखें। सम्मेलन में पधार कर अनुगृहित करें।

चुनाव समाचार

आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय, नई कॉलोनी मोड़, पुराना रेलवे रोड, गुड़गांव, हरियाणा

प्रधान- श्री भारत भूषण आर्य **मन्त्री-** श्री नरेन्द्र आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री शिवदत्त आर्य

आर्य समाज अर्जुन नगर, गुड़गांव, हरियाणा

प्रधान- श्री मा. सोमनाथ आर्य **मन्त्री-** श्री लक्ष्मण पाहुजा

कोषाध्यक्ष- श्री अर्जुनदेव मनचन्दा

आर्य समाज रूद्रपुर, उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

प्रधान- श्री सुभाष चन्द्र आर्य **मन्त्री-** डॉ. सुरेश कुमार आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री वेद प्रकाश गोवर

वेद मनीषा न्यास, आर्य समाज सिविल लाईन्स, रामघाट मार्ग,

अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

प्रधान- डॉ. पपेन्द्र आर्य **मन्त्री-** श्री योगेश शर्मा

कोषाध्यक्ष- श्री रामदीन आर्य पुरुषार्थी

आर्य समाज सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली

प्रधान- श्री रवि देव गुप्ता **मन्त्री-** श्री एस के शर्मा

कोषाध्यक्ष- श्री संजय खण्डेलवाल

आर्य पुरोहित सभा, आर्य समाज अंधेरी, मुम्बई

प्रधान- श्री पं. नामदेव आर्य **मन्त्री-** श्री नरेन्द्र शास्त्री

कोषाध्यक्ष- श्री विनोद कुमार शास्त्री

आर्य समाज पंचवटी, नासिक, महाराष्ट्र

प्रधान- श्री गुलशन कुमार चट्वा **मन्त्री-** श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा

कोषाध्यक्ष- श्रीमती सरिता पाण्डे

कृप्या सहयोग करें।



स्वच्छ भारत अभियान
**SWACHH BHARAT
ABHIYAN**

Honey For Health and Nutrition

□ Dr. Nimisha Mishra

Use of honey as food and medicine has been existing both in ancient and modern science. Raw honey is most ancient sweetener. Natural honey is a sweet flavored liquid food of high nutritional value of immense health and wealth benefits. Due to high attributes of honey, an alternative medicine branch called Apitherapy has developed in recent years offering treatment based on honey and other bee products. China and Argentina are major honey producing countries. The consumption of honey enhance the athletic performance and could be the better substitute of glucose to regain energy. The dietary significance of any carbohydrates diet is often indicated in the term of Glycemic Index (GI). Honey is the food carbohydrate with low glycemic index (GI), increases small amount of glucose in blood so, diabetic patients can harmlessly and safely eat this sweet substance.

10 Medicinal Uses of Honey

(1) Honey as Food: Honey is not only important for its medicinal attributes but also useful as food sweetener, religious purpose, natural beauty agent and a complete food. The high nutritional profile of honey with wide range of nutrients encourages its use as food. It is advisable for adults to take 70-75 mg/dl of honey to get full desirable nutritional and health benefits. Honey has high amount of fructose and its absorption is slow, due to this property is maintain homeostasis and sustain energy, which suggests it as better source for replenishment for energy during physical exercise. Apart from this it has mild laxative property. Calcium and iron are most important nutrients for our health. We daily take a lot of iron and calcium from various diet sources but they are not absorbed properly. It is a well documented fact that honey users have high level of calcium and iron, that suggests that honey enhances the absorption of calcium and iron from different diet sources and can reduce the risk of osteoporosis and anemia. (2) Anti-oxidant properties: Presence of free radicals and reactive oxygen species (ROS) are responsible for cellular dysfunction, metabolic disorders, cardiovascular diseases as well as ageing. The consumption of food substances rich in antioxidant can protect these pathological conditions. Researches indicated that natural honey contain various antioxidant substance (phenol, flavanoids). As darker honey are known to have high amount of antioxidant properties. (3) Honey for Infant Health: Feeding honey to newborn is a custom has been described in Ayurveda as (Jatakarnma). It is now established fact that feeding honey will improve memory, growth and enhance children performances in later life. Apart from this honey can also reduce crying phase of infants, better skin color, less susceptible to diseases, no digestion

problems, Lighter and thinner stool and improves immunity. (4) Antibacterial Property: Out body has continuous exposure of various harmful microorganism know as bacteria. Natural honey is very potent broad spectrum antibiotic which prevent growth and activity of both gram positive and gram negative bacteria. This attribute of honey is because of its high osmolarity, acidity and particularly hydrogen peroxide content. (5) Use in Gastroenterology: Medicinal use of natural honey against the gastrointestinal diseases like ulcers, gastritis, Gastroenteritis has been mentioned since ancient time. Honey has potency to inhibit growth of Salmonella, Shigella, E.Coli, Helicobacter-pylori which causes peptic ulcer and gastritis. (6) Use in Cardiovascular/Hyperlipidemia Problems: Honey has been found beneficial in cardiac patients. Consumption of natural honey reduces cardiovascular risk factors particularly by decreasing low density lipoproteins, cholesterol, and triglycerides levels in blood. (7) Eye disorders: Natural honey usually applied on the eyes to prevent the scarring effect of the cornea during measles infection. Apart from this, it is also used as curative substance for eye disorders like redness of eyes, pus discharge, Eye burns etc. (8) Use in oral Health: The use of natural honey promote oral health and wellness. Honey reduces risk of dental caries, Dental plaque (yellow discoloration of teeth), infection in gums (Gingivitis), Erosion of teeth because of its micronutrients-Fluoride, Calcium, Phosphorus. (9) Wound Management: Antiseptic property of honey provide protective barrier and good for treating wound, burns, ulcers Application of honey dressing has excellent result in healing of surgical wound and it does not stick to wounded tissue. (10) Enzymatic & Pre-biotic properties: Natural honey contains several enzymes (Diastase, Invertase) that enhances digestion of starch and carbohydrates. Gastrointestinal tract contain lots of essential and beneficial bacteria for maintenance of good health and life. Prebiotic attribute of honey can facilitates growth and activity of beneficial bacteria like lactobacillus and bifidofilus.

Regular consumption of natural honey gives nourishment, metabolic activity, growth and healthy living. After evaluating all benefits honey users it can be suggested that honey should be used as a substitute of sugar in processed food, infant formula food, children's snacks and also commercially available sports drinks. This will be a noble approach to built up healthy generations by preventing diseases and leading to socially and economically productive health.

(DAV Pharmacy, Jhalandhar)

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे हैं यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रुपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)

शिवराजवती आर्या
उप-प्रधाना

रामनाथ सहगल
(मन्त्री)

आर्य समाज कस्तुरबा नगर एवम् डिफेन्स कॉलोनी नई दिल्ली का संयुक्त वार्षिकोत्सव सम्पन्न

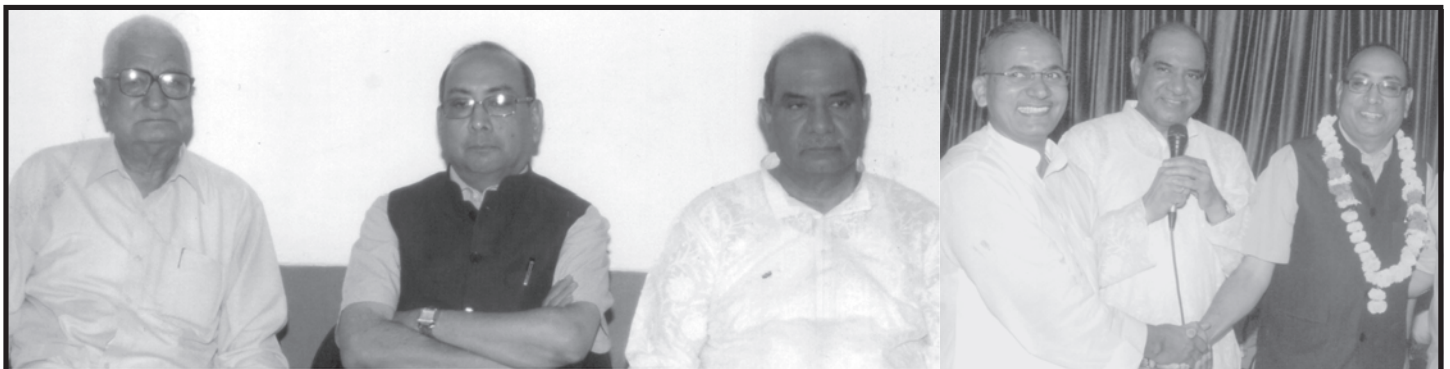
दिनांक 26 सितम्बर 2014 से 28 सितम्बर 2014 तक आर्य समाज कस्तुरबा नगर एवम् डिफेन्स कॉलोनी नई दिल्ली का संयुक्त वार्षिकोत्सव श्री आनन्द चौहान (डायरेक्टर, एमेटि शिक्षण संस्थान एवम् ए.के.सी ग्रुप) संस्थापक प्रधान आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातः यजुर्वेद शतकम् महायज्ञ



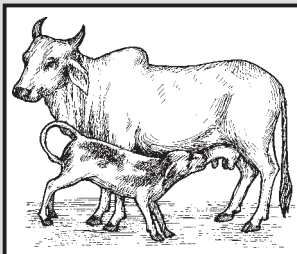
आचार्य रामचन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मात्व में सम्पन्न हुआ एवम् सायं श्री कुलदीप आर्य (बिजनौर) के सुमधुर भजनों से सभी उपस्थित जनसमूह मन्त्रमुग्ध हुआ। तदुपरोक्त डॉ. विनय वेदालंकार (उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय) द्वारा जीवात्मा एवम् परमात्मा, सार्थक जीवन के वैदिक सूत्र एवम् आर्य समाज आज भी प्रासांगिक विषयों पर अपना विचार रखें। उपस्थित जनसमूह ने अपनी करतल ध्वनि से यह सिद्ध कर दिया कि विनय वेदालंकार द्वारा उपरोक्त विषयों को वैज्ञानिक आधार पर प्रस्तुत करने पर वह कितने प्रसन्न हैं।

इस आयोजन में आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी के प्रधान श्री अजय चौहान, श्री हर प्रकाश खन्ना, श्री एस.सी. गुप्ता, महिला आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती मृदुला चौहान, मन्त्राणी मनोरमा खंडुजा कोषाध्यक्ष श्रीमती सुदेश राव एवम् श्रीमती नीलम सहगल का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर टंकारा ट्रस्ट की ट्रस्टी/ उपप्रधान डी.ए.वी प्रबन्धकर्त्री समिति/ उपप्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा श्री रामनाथ सहगल जी का विशेष आशीर्वाद प्राप्त हुआ। उनके द्वारा इस अवसर पर आर्य समाज के व्योवृद्ध/सहयोगी सदस्य एवम् सहयोगियों का सम्मान भी किया गया।



गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।



टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त

हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि त्रायकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

प्रार्थना समाज- यह महाराष्ट्र-क्षेत्र में समाज- सुधार तथा धर्म सुधार का कार्य करता था। महादेव गोविन्द रानाडे जो कि प्रखर बुद्धिजीवी थे, कानून-विद की तरह हिन्दू धर्म-शास्त्रों के भी माने हुए विद्वान थे। ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज के कार्यों में भी आम समानता थी। यह लिखते हुए दुःख होता है कि महादेव गोविन्द रानाडे की भी यही मान्यता थी कि ब्रिटिश शासन से भारत को लाभ अधिक और हानि बहुत कम है।” इस राज्य के माध्यम से भारत बहुविधि उन्नति कर पायेगा। कालान्तर में अपनी सामाजिक-विसंगतियों के कारण प्रार्थना समाज शनैः शनैः कमजोर पड़ता चला गया और धर्म-सुधार तथा समाज-सुधार बन्द हो गया। कुछ बुद्धिजीवी इसे ‘मृत आन्दोलन’ के नाम से पुकारने लगे। इस संक्षिप्त विवेचन को ध्यानपूर्वक पढ़ लेने के पश्चात् अब आर्यसमाज की आवश्यकता उसका महत्व तथा उसका बहु आयामी कार्य-क्षेत्र समझने में सरलता उत्पन्न होगी। महर्षि दयानन्द का कार्य-क्षेत्र दीक्षा के पश्चात् यद्यपि उत्तर भारत ही रहा, परन्तु उन्होंने सुदूर दक्षिण तथा बंगाल जैसे प्रान्तों की भी उपेक्षा नहीं की।

आर्यसमाज की स्थापना- महर्षि दयानन्द के हृदय में ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज की ब्रिटिश शासन के प्रति रुझान, समर्शन तथा उसके चिरायुपन के विचारों ने एक भयंकर पीड़ा उत्पन्न कर दी। उनके नेत्रों के सम्मुख सन् १८५७ की महान क्रांति जो कि स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु प्रथम संग्राम था, कतिपय त्रुटियों के कारण असफल होते देखा था। वे तटस्थ भाव से इन त्रुटियों पर चिंतन और मनन करते रहे। वे इतिहास की इन त्रुटियों की पुनरावृत्ति होने देना नहीं चाहते थे।

मुम्बई (तत्कालीन बम्बई) के अनेक श्रद्धालुओं ने जब उनके विचारों को किसी संस्था के माध्यम से प्रचारित और प्रसारित करने का सुझाव (प्रस्ताव) रखा तब वे संगठन को स्थापित करने या सहमत होकर उसके नामकरण पर गहराई से विचार करने लगे। उनके सम्मुख ब्रह्म-समाज और प्रार्थना समाज की अंग्रेजों के प्रति भक्ति का दर्शन स्पष्ट रूप से झलक रहा था। वे तो विश्व मानवता की सुख-शान्ति के साथ ही साथ सर्वप्रथम भारत में ही धार्मिक सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा राजनैतिक उत्क्रांति करना चाहते थे। विश्व मानवता की शांति और ज्ञान के लिए उनके सम्मुख ‘वेद’ था तथा राजनैतिक उत्क्रांति तथा स्वराज्य के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति सर्वोपरि थी। उनके एक हाथ में ‘वेद’ तथा दूसरे हाथ में ‘स्वतंत्रता’ का मधुरप था। उस ऋषि ने अपने गुरु विरजानन्द के आदेश के अनुसार ‘वेद, आर्य प्रणाली, अन्ध विश्वास आदि दूर करने के लिए ईश्वरीय ग्रंथ ‘वेद’ को महत्व दिया। ऋग्वेद ९/६/५ के अनुसार इन्द्र वर्धन्तो... कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।.....अर्थात् इन्द्रता की श्रेष्ठता को बढ़ाते हुए, निरन्तर प्रगति करते हुए संसार को सभी मनुष्यों को श्रेष्ठ (आर्य) बनायें। तथा कृतन्त्रता के कुविचारों से दूरकर अदानी कंजूस तथा कृपण न बनें। अपना ज्ञान और ऐश्वर्य मानव कल्याण में लगावें। यह है आर्यसमाज दर्शन।

महर्षि दयानन्द आर्यसमाज को ब्रह्म-समाज और प्रार्थना-समाज के समान मात्र संस्था बनाकर नहीं रखना चाहते थे। ऋग्वेद के उपरोक्त मंत्र के भाव के अनुसार वे आर्यसमाज को सतत् चलते वाली क्रांति बनाना चाहते थे। यह क्रांति विश्व के अंतिम मनुष्य तक सुख शांति देने वाली हो, इसलिए आर्यसमाज एक क्रांतिकारी आन्दोलन है। यह एक सशक्त रचनात्मक आन्दोलन है। इसके पूर्व रानडे जी ने- अन्य पौराणिक ग्रंथों के आधार पर बाल-विवाह तथा सतीप्रथा को अधार्मिक अमानवीय

सिद्ध कर दिखाया। मानवतीय महादेव गोविन्द रानडे ने ऊँच नीच, छुआछूत तथा अन्ध विश्वासों को समाज से मिटाने का भरसक पुरुषार्थ किया। उन्होंने महाराष्ट्र में बाल-विवाह, अनमेल विवाह को विरोध कर विधवा/विधुर का पुनर्विवाह को कानून सम्मत का समाज में प्रचलित कर दिया। किन्तु इन दोनों सामाजिक संगठनों ने दुर्दैववश तत्कालीन अंग्रेजी राज्य को भारत के लिए वरदान माना और ईश्वर से उसके चिरायु होने की प्रार्थना भी करने लगे। यह भी देश का दुर्भाग्य था।

महर्षि दयानन्द स्वाभिमानी, ईश्वर-विश्वासी, सत्य-भक्त तथा वेदों के पुजारी थे। वे मानव जाति को इहलौकिक तथा पारलौकिक सुख तथा आनन्द की ओर ले जाना चाहते थे। ये दोनों बातें राजनीतिक रूप से परतंत्र-राष्ट्र में सम्भव नहीं थीं। कष्टों, अभावों, अभाव और अन्याय से मुक्ति चाहने वाला मानवीय राजनयिक-परतंत्रता तथा पीड़ा कैसे पसन्द कर सकता था? आर्यसमाज की स्थापना का एक मात्र उद्देश्य आर्यसमाज के ४ वेदों पर आधारित दस नियम हैं। ये नियम सार्वकालिक, सार्वभौमिक तथा मानव जाति को उन्नति की ओर चलने की प्रेरणा देने वाले हैं। संसार के अनेक देशों के बुद्धिजीवियों पर इन दस नियमों पर बड़ा मंथन किया गया है, परन्तु किसी ने और कहीं भी इनमें त्रुटि नहीं पाई इनमें शाश्वत सत्य की स्पष्ट झलक है। निर्वाचन-प्रणाली- आर्यसमाज के वार्षिक चुनाव तो एक सामाजिक-व्यवस्था के प्रतीक हैं, ये हमारे साधन हैं, साध्य नहीं। हमारा साध्य, हमारा उद्देश्य, हमारा जयघोष और अंतिम मन्तव्य दुःख रहित मोक्ष को प्राप्त करना है। इसके लिए उन्होंने वैदिक वाङ्मय को एक मात्र आधार माना है। इस साध्य की पूर्ति के लिए आर्यसमाज एक साधन है। यह एक सुन्दर चमकीली सीढ़ी है।

कबीरा तेरी झोपड़ी, गलकटियन के पास।

जो जस करेंगे, तस भरेंगे, तू क्यों हो उदास?

मनुष्य अपने साथ कुछ कमियों, त्रुटियों, दोषों तथा अभावों के साथ लेकर उत्पन्न हुआ है। दार्शनिक रूप से जीव ‘अल्पज्ञ’ है, इस कारण अज्ञान, अभाव और अन्याय पर आधारित त्रुटियाँ भी उसके साथ हैं। आर्यसमाज में भी कतिपय स्वार्थी, पक्षपाती, दम्भी तथा नास्तिक प्रवृत्तियों के तत्व हैं। ऐसा प्रतीत होता है, नदी मैदान के उस भाग में बहते हुए आ गई है, जहाँ उसका पाट, चौड़ाई अधिक हो गई है, इस कारण उसका प्रवाह भी मन्द हो गया है। इस कारण न तो शीर्ष नेतृत्व ही रह पाया और न अनुषांगिक अन्य संस्थाएँ। शिक्षा के नाम पर गुरुकुल और डी.ए.वी. स्कूल चलाये जा रहे हैं। यह भी उचित है। परन्तु डी.ए.वी. के क्षेत्र में कार्यरत कुछ तत्व मांसाहारी हैं, इस कारण इन तत्वों की भर्त्सना करते रहना चाहिए। मांसाहार अवैदिक है।

ऐसी विषम परिस्थिति में मेरे आर्य बन्धुओ! निराश होने जैसी कोई बात नहीं है। यदि हम इहलौकिक और पारलौकिक सुख, शांति और आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें आर्यसमाज में आना ही पड़ेगा। आर्यसमाज ही वह सतत् चलने वाली क्रांति है, जो स्थानीय और सीमित कालीन नहीं है। अन्य संगठनों के द्वारा चाहे कितना ही ढिंढोरा पीटा जाय परन्तु आर्यसमाज के समान पवित्र श्रेष्ठ, वेदों पर आधारित, आस्तिक तथा मानव कल्याण की इच्छा को धारण करने वाली कोई संस्था नहीं है। अब तो आर्यसमाज की जड़ें ‘पाताल’ पकड़ चुकी हैं। इनका अन्तर्राष्ट्रीय ताना-बाना बन चुका है। बस, आवश्यकता है-आपके और हमारे मनों को मिलाकर, ऋषि दयानन्द की जय बोलकर पुनः संगठित होकर जयघोष करो- जो बोले सो ‘अभय’ वैदिक धर्म की जय, आर्यसमाज अमर रहे।

- सुदामा नगर, इन्दौर-452009 (म.प्र.)

॥ ओ३म् ॥

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला राजकोट- 363650 (गुजरात) दूरभाष: (02822) 287756

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 16, 17, 18 फरवरी 2015 (सोमवार, मंगलवार, बुधवार) को महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ : दिनांक 11 फरवरी 2015 से 17 फरवरी 2015 तक

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर), श्री कुलदीप शास्त्री सहपत्नीक (बिजनौर)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : **श्री पूनम सूरी**

(प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट)

बोधोत्सव

दिनांक 17.02.2015 मंगलवार

मुख्य अतिथि: गुजरात के राज्यपाल/मुख्यमन्त्री के आने की सम्भावना

विशिष्ट अतिथि: श्री एच आर गन्धार

(प्रशासक एवम् सलाहकार डी.ए.वी. विश्वविद्यालय, जालन्धर)

कार्यक्रम के आमन्त्रित विद्वान्:

स्वामी आर्येशानन्द (माउन्ट आबू), डॉ. विनय विद्यालंकार (एसोसियेट प्रो./अध्यक्ष संस्कृत विभाग, राजकीय, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर, नैनीताल), श्री मोहन भाई कुण्डारिया (स्थानीय सांसद), श्री बल्लभभाई कथीरिया (अध्यक्ष गौ सेवा सदन गुजरात), श्री बामनभाई मेटालिया (स्थानीय विधायक), श्री कान्ति भाई अमरतिया (विधायक मौरवी), श्री एस के शर्मा (मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा), श्री विनोद शर्मा (यू.एस.ए.), श्री गिरीश खोसला (यू.एस.ए.), श्री वाचोनिधी आर्य (गांधीधाम) एवं इसके अतिरिक्त देश-विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज, शिक्षण संस्थान तथा सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भिजवाने की कृपा करें और ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनें। बाहर से आने वाले ऋषि भक्त ऋतु अनुकूल हल्का बिस्तर साथ लावें और आने की पूर्व सूचना टंकारा अथवा दिल्ली कार्यालय को अवश्य देवें (15 जनवरी 2015 तक), जिससे व्यवस्था बनाई जा सके।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल

(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)

शिवराजवती आर्या

(उप-प्रधान)

रामनाथ सहगल

मन्त्री

समय और समझ दोनों एक साथ
खुशकिस्मत लोगों को ही मिलते हैं।

क्योंकि

अक्सर समय पर समझ नहीं आती और
समझ आने पर समय निकल जाता है।

टंकारा समाचार

नवम्बर, 2014

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-11-2014

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.10.2014

मसालों का अम्बार, एम.डी.एच. परिवार।



मसाले

असली मसाले
सच - सच



ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 Website : www.mdhspices.com

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड